विस्तृत प्रतिवेदन

शिक्षक दिवस
एवं
शिक्षक सम्मान समारोह

(शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर)

04 सितम्बर 2025

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
आईयूसीटीई कैंपस, सुंदर बगिया, नरिया-बीएलडब्ल्यू रोड, वाराणसी - 221005

Inter University Centre for Teacher Education
(An Autonomous Institution of UGC, MoE, Govt. of India)

© IUCTE, September, 2025

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored or distributed in any form or by any means, electronic or mechanical, magnetic tape, including photocopying, recording or otherwise, without written permission from the publisher.

Published by Senior Administrative Officer,
Inter University Centre for Teacher Education (IUCTE)
Banaras Hindu University, Sundar Bagiya, Nariya-B.L.W. Road, Varanasi-221005
Design & Layout by Shubham Prajapati (Technical Assistant, IUCTE) & Printed at Jembo Photo State & Internet

निदेशक की कलम से

एक शिक्षक मात्र सूचनाओं का वाहक नहीं, अपितु राष्ट्र का शिल्पी, मूल्यों का रक्षक और व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का आधार होता है। हमारी सनातन संस्कृति में गुरु की महिमा को सर्वोपरि मानते हुए उन्हें 'परब्रह्म' की संज्ञा दी गई है; यह अटूट विश्वास हमारे गौरवशाली अतीत और वर्तमान का प्राणतत्व है।

5 सितम्बर का यह पावन अवसर समूचे शैक्षिक समुदाय के लिए आत्मीयता, कृतज्ञता और आत्मचिंतन का क्षण है। यह दिवस महान दार्शनिक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् की पावन स्मृति को नमन करने के साथ-साथ हमें समाज के प्रति अपने गहन कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का बोध भी कराता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के दूरगामी विजन ने शिक्षा को मात्र किताबी ज्ञान से ऊपर उठाकर उसे नैतिक, अंतर्विषयी और भारतीय जीवन-बोध से ओतप्रोत एक समग्र चेतना के रूप में परिभाषित किया है। ज्ञान के इस नवीन युग में शिक्षक का दायित्व और भी व्यापक हो गया है। आज हमें ऐसे प्रेरणापुंज शिक्षकों की आवश्यकता है जो विषय-दक्ष होने के साथ-साथ नवाचार प्रेमी हों और विद्यार्थियों की अंतर्निहित क्षमताओं को प्रदीप्त करने का सामर्थ्य रखते हों।

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र (IUCTE) इस पुनीत ध्येय की पूर्ति के लिए निरंतर क्रियाशील है। हम शिक्षक-प्रशिक्षण के मानकीकरण, प्राचीन भारतीय प्रज्ञा के पुनर्जागरण और आधुनिक शिक्षण पद्धतियों के समन्वय हेतु संकल्पित हैं। शिक्षक दिवस का यह पर्व हमारे इन लक्ष्यों को और अधिक ऊर्जा प्रदान करता है।

इस मंगल अवसर पर मैं उन सभी ज्ञान-साधकों का अभिनंदन करता हूँ, जो अपनी अटूट साधना और निष्ठा से समाज को आलोकित कर रहे हैं। आइए, हम सब मिलकर शिक्षा को एक ऐसी तपस्या के रूप में स्वीकार करें जो न केवल साक्षरता दे, बल्कि सार्थक जीवन का पथ प्रशस्त करे।

शुभकामनाओं सहित

प्रो. प्रेम नारायण सिंह
निदेशक

शुभकामना संदेश

शिक्षक दिवस मात्र एक वार्षिक आयोजन नहीं, बल्कि यह शैक्षणिक शुचिता, अटूट निष्ठा और गुरुत्व की ऊर्जा का उत्सव है। यह उन महान ज्ञान-साधकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का क्षण है, जिन्होंने निस्वार्थ भाव से समाज को वैचारिक दिशा दी और अनगिनत व्यक्तित्वों का निर्माण किया।

हमारी गौरवशाली विरासत में शिक्षा कभी भी केवल उदरपूर्ति का माध्यम नहीं रही, अपितु वह मुक्ति और आत्मबोध का मार्ग रही है। "सा विद्या या विमुक्तये" के शाश्वत आदर्श से अनुप्राणित हमारे समाज में शिक्षक सदैव एक पथ-प्रदर्शक और नैतिक अभिभावक के रूप में पूजनीय रहे हैं। आज २१वीं सदी के तकनीकी युग और वैश्विक परिवर्तनों के बीच, शिक्षक का दायित्व और भी चुनौतीपूर्ण एवं विस्तृत हो गया है।

वर्तमान समय की मांग है कि शिक्षक केवल सूचनाओं के संग्रहकर्ता न बनकर अन्वेषणात्मक दृष्टि, नवाचार की ललक और विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक समझ से परिपूर्ण हों। एक शिक्षक तभी नई पीढ़ी में सृजनात्मकता और तार्किक चेतना का संचार कर सकता है, जब वह स्वयं निरंतर शोधरत और प्रगतिशील बना रहे। ज्ञान की जीवंतता शिक्षक की अपनी जिज्ञासा में निहित है।

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र (IUCTE), वाराणसी का ध्येय रहा है कि शिक्षक-प्रशिक्षण की परिधि को संकुचित पाठ्यक्रमों से बाहर निकालकर उसे भारतीय प्रज्ञा, शोध-चेतना और मानवीय संवेदनाओं से समृद्ध किया जाए। हम गुणवत्तापरक शिक्षा और अनुसंधान के उच्चतम प्रतिमान स्थापित करने हेतु सतत संकल्पित हैं।

इस पुनीत अवसर पर, मैं समस्त शिक्षक समुदाय का आह्वान करता हूँ कि हम स्वयं को केवल 'ज्ञान का वितरक' न मानकर 'जीवन का शिल्पकार' समझें। प्रत्येक शिक्षक उस ज्योतिपुंज के समान है जो अज्ञान के तिमिर को हरकर भविष्य को आलोकित करता है। आइए, हम शिक्षा को बोध, करुणा, आत्म-अनुशासन और रचनात्मक प्रयोगों का एक अनुपम संगम बनाएँ।

शिक्षक दिवस पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रो. आशीष श्रीवास्तव
संकाय प्रमुख, शैक्षणिक एवं शोध

अनुक्रमणिका

क्रम.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	कार्यक्रम के बारे में	1
2.	अतिथि परिचय	2-3
3.	कार्यक्रम का विस्तृत विवरण	3-11
4.	सम्मानित अध्यापकों का उद्बोधन	12-17
5.	समाचार पत्रों में	18-24
6.	आयोजन समिति	25
7.	कार्यक्रम की झलकियाँ	26

कार्यक्रम के बारे में

शिक्षक-दिवस का यह पावन पर्व भारत की शैक्षिक परम्परा में केवल एक तिथिगत औपचारिकता नहीं, बल्कि गुरु-ऋण के प्रति कृतज्ञता, आत्मावलोकन और सांस्कृतिक पुनरुत्थान का एक विराट उत्सव है, जो प्रतिवर्ष 5 सितम्बर को राष्ट्र के मानस-पटल पर श्रद्धा, आदर और उल्लास का अद्वितीय प्रकाश फैलाता है। यह दिवस भारत के द्वितीय राष्ट्रपति, प्रखर राष्ट्रचिंतक, अतुलनीय दार्शनिक, तत्वमीमांसक तथा आदर्श शिक्षक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जन्म-जयंती को समर्पित है, जो हमारी सनातन गुरु-शिष्य परम्परा के प्रति अविचल निष्ठा और आदर का प्रतीक बनकर उदित होता है।

इसी भाव को ध्यान में रखते हुये शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर दिनांक 4 सितम्बर 2025 को 'अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र' (IUCTE), वाराणसी में एक भावपूर्ण, गरिमामयी और वैचारिक दृष्टि से ऊर्जस्वित समारोह का आयोजन सम्पन्न हुआ। इस आयोजन का मूल ध्येय 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' के आलोक में शिक्षक की भूमिका को पुनः राष्ट्र की धुरी, समाज के पथप्रदर्शक और भविष्य के वास्तुकार के रूप में प्रतिष्ठित करना था।

इस विचार-गोष्ठी में प्रबुद्ध वक्ताओं ने "सा विद्या या विमुक्तये" के शाश्वत उद्घोष को आधुनिक नवाचारों तथा डिजिटल युग की आवश्यकताओं के साथ संयोजित करते हुए यह प्रतिपादित किया कि आज का शिक्षक मात्र ज्ञान-संचारक नहीं, बल्कि विद्यार्थी की सुप्त अंतःशक्तियों का प्रकटीकरण, चरित्र-विकास का पोषक और रचनात्मक सोच का संवर्धक है। विशेषत: यह रेखांकित किया गया कि एक आदर्श शिक्षक के लिए स्वयं सतत जिज्ञासु, शोधोन्मुख, नवोन्मेषी एवं आत्म-विकास हेतु प्रतिबद्ध होना अनिवार्य है, क्योंकि ज्ञान की जीवंतता निरंतर प्रज्वलित जिज्ञासा और सतत् साधना में ही निहित होती है।

समारोह में अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र द्वारा कुछ विशिष्ट शिक्षकों को कार्यक्रम अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि आदि विद्वतजनों ने सम्मानित करते हुए यह संकल्प पुनः दोहराया गया कि शिक्षक-प्रशिक्षण की गुणवत्ता को भारतीय ज्ञानपरंपरा, वैज्ञानिक चेतना और नवाचार के लोककल्याणी समन्वय से समृद्ध करने हेतु संस्था पूर्णतः समर्पित है। इस अवसर पर शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता और आदर का भाव विशेष रूप से प्रतिध्वनित हुआ।

कार्यक्रम के समापन पर गुरु-वंदना और सम्मान-अर्पण के माध्यम से यह संदेश व्यापक रूप से प्रसारित हुआ कि जब शिक्षक अपनी भूमिका को रोजगार नहीं, बल्कि 'तपस्या', 'सेवा' और 'लोक-संग्रह' के रूप में स्वीकार करता है, तभी वह समाज और राष्ट्र में अपेक्षित सकारात्मक परिवर्तन का वास्तविक प्रेरक बन सकता है।

निःसंदेह, यह समारोह शिक्षकीय चेतना के परिष्कार, मूल्य-आधारित शिक्षा की स्थापना और भावी अध्यापकों में राष्ट्र-निर्माण के प्रति नवीन ऊर्जा, उत्तरदायित्व तथा संकल्प के बीज रोपित करने वाला एक सशक्त मील का पत्थर सिद्ध हुआ।

अतिथि परिचय

प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी

प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी एक विश्वविख्यात शिक्षाविद्, प्रखर शोधकर्ता और कुशल अकादमिक प्रशासक हैं, जो वर्तमान में काशी हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) के कुलपति के रूप में भारतीय उच्च शिक्षा को नई दिशा दे रहे हैं। अगस्त 2025 में कार्यभार संभालने वाले प्रो. चतुर्वेदी ने अपनी पूरी उच्च शिक्षा बी.टेक, एम.टेक और पीएच.डी. देश के प्रतिष्ठित संस्थान IIT कानपुर से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में प्राप्त की है। बीएचयू में कुलपति नियुक्त होने से पूर्व, उन्होंने IIT रुड़की के निदेशक (2017-2022) के रूप में एक सफल कार्यकाल पूरा किया, जहाँ उनके नेतृत्व में संस्थान ने वैश्विक रैंकिंग और अनुसंधान नवाचार में उल्लेखनीय प्रगति की। इसके अतिरिक्त, उन्होंने IIT मंडी के निदेशक और IIT कानपुर के उप-निदेशक जैसे महत्वपूर्ण पदों पर भी अपनी प्रशासनिक योग्यता सिद्ध की है। शोध के क्षेत्र में उनकी विशेषज्ञता 'वायरलेस कम्युनिकेशन' और 'कम्युनिकेशन थ्योरी' में है, और उनके शोध पत्र दुनिया के प्रतिष्ठित जर्नल्स में प्रकाशित हो चुके हैं। शिक्षण के प्रति उनके समर्पण के लिए उन्हें INSA शिक्षक पुरस्कार (2017) और IIT कानपुर द्वारा 'प्रतिष्ठित शिक्षक पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। वे भारतीय दूरसंचार मानक विकास सोसायटी (TSDSI) के संस्थापक सदस्य भी रहे हैं, जो भारत में 5G और अन्य दूरसंचार मानकों के निर्धारण में सक्रिय है। बीएचयू के कुलपति के रूप में वे महामना मालवीय जी के विजन के अनुरूप विश्वविद्यालय को आधुनिक शोध, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और नैतिक शिक्षा का वैश्विक केंद्र बनाने के लिए प्रयासरत हैं। उनका सौम्य व्यक्तित्व, निष्पक्ष निर्णय लेने की क्षमता और तकनीकी विजन उन्हें समकालीन भारत के सबसे प्रभावशाली शैक्षणिक नेतृत्वकर्ताओं में से एक बनाता है।

प्रो. बिहारी लाल शर्मा

प्रो. बिहारी लाल शर्मा संस्कृत जगत के एक शीर्षस्थ विद्वान, प्रख्यात ज्योतिषाचार्य और कुशल प्रशासक हैं, जो वर्तमान में (2026) वाराणसी स्थित ऐतिहासिक सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में भारतीय ज्ञान परंपरा का नेतृत्व कर रहे हैं। मूल रूप से हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले के निवासी प्रो. शर्मा ने अपनी विद्वता और कर्मठता से संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए हैं। कुलपति नियुक्त होने से पूर्व, उन्होंने नई दिल्ली स्थित श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के ज्योतिष विभाग में प्रो. और वेद-वेदांग संकाय के प्रमुख के रूप में अपनी लंबी और यशस्वी सेवाएँ दीं। ज्योतिष शास्त्र और प्राचीन भारतीय विज्ञान में उनकी विशेषज्ञता सर्वविदित है। उनके

कुशल और दूरदर्शी नेतृत्व का ही परिणाम है कि सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय नित्य अकादमिक विशिष्टताओं को प्राप्त कर रहा है। शैक्षणिक प्रशासन के साथ-साथ वे नीतिगत स्तर पर भी अत्यंत सक्रिय हैं; सितंबर 2025 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने उन्हें 'अंतर-विश्वविद्यालयीय योग विज्ञान केंद्र' की शासी परिषद का सदस्य मनोनीत किया है। प्रो. शर्मा केवल एक प्रशासक ही नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) के प्रबल संवाहक भी हैं, जो काशी और देश के अन्य सांस्कृतिक केंद्रों के बीच भाषाई और आध्यात्मिक सेतु बनाने का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने प्राचीन पांडुलिपियों के संरक्षण और आधुनिक तकनीक के साथ संस्कृत शिक्षा के समन्वय पर विशेष बल दिया है। उनकी निष्ठा, सरल स्वभाव और शास्त्रोक्त विजन उन्हें आधुनिक भारत में संस्कृत और ओरिएंटल स्टडीज के पुनरुद्धार के लिए एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व बनाता है।

कार्यक्रम का विस्तृत विवरण

प्रो. आशीष श्रीवास्तव

अपने उद्बोधन में प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने कहा की आज के इस विशिष्ट अवसर पर अंतर-विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (IUCTE) के सभागार में हम सभी शिक्षक दिवस के पावन उपलक्ष्य में एकत्रित हुए हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे माननीय निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह का मैं हृदय से स्वागत करता हूँ। साथ ही इस समारोह के मुख्य अतिथि, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय प्रो. अजीत कुमार चतुर्वेदी का

हार्दिक अभिनंदन करता हूँ, जिनकी उपस्थिति आज के कार्यक्रम को विशेष गरिमा प्रदान करती है। कार्यक्रम के सारस्वत अतिथि एवं मुख्य वक्ता प्रो. बिहारी लाल शर्मा तथा प्रो. सुभाष चंद्र तिवारी का भी मैं आदरपूर्वक स्वागत करता हूँ।

इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित महामना कैंसर अस्पताल के निदेशक डॉ. एस. प्रधान, प्रो. राम किशोर त्रिपाठी, प्रो. राजनाथ उपाध्याय, प्रो. अरविंद कुमार पांडेय, प्रो. हरेंद्र प्रसाद सिंह, प्रो. गीता राय तथा विभिन्न

प्रतिष्ठित संस्थानों से आए हुए सभी विद्वान आचार्यों का मैं हृदय से अभिनंदन करता हूँ। IUCTE परिवार की ओर से प्रो. अजय कुमार सिंह, डॉ. राजा पाठक, डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी, डॉ. कुशाग्री सिंह, डॉ. दीप्ति सहित सभी शिक्षकों एवं प्रशासनिक सहयोगियों का भी स्वागत एवं शुभकामनाएँ। शिक्षक दिवस के इस पावन अवसर पर आप सभी को हार्दिक बधाई।

आज का यह दिन केवल एक औपचारिक उत्सव नहीं है, बल्कि उन गुरुओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर है, जिनके ज्ञान, मार्गदर्शन और मूल्यबोध से समाज और राष्ट्र का निर्माण होता है। यह अवसर हमें आत्मचिंतन का भी निमंत्रण देता है कि हम शिक्षा की परंपरागत गरिमा को किस प्रकार संरक्षित रखते हुए उसे भविष्य की पीढ़ियों तक और अधिक समृद्ध रूप में पहुंचा सकते हैं।

इस समय भारत विश्व में अपनी पहचान एक सशक्त ज्ञान-समाज के रूप में स्थापित कर रहा है। 2015 के बाद विश्व रैंकिंग को लेकर व्यापक बहस और 2016-17 के बजट भाषण में 20 विश्वस्तरीय विश्वविद्यालयों की परिकल्पना ने शिक्षाविदों के बीच महत्वपूर्ण विमर्श उत्पन्न किया। इस अध्ययन से एक मुख्य निष्कर्ष यह निकला कि अंतर्राष्ट्रीयकरण विशेषकर '*इंटरनेशनलाइजेशन एट होम*' आधुनिक उच्च शिक्षा का अनिवार्य तत्व है। यही कारण है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दस्तावेज़ में अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण का 41 बार उल्लेख मिलता है, जो हमें यह संदेश देता है कि अब प्रतिस्पर्धा नहीं बल्कि सहयोग ही सफलता का वास्तविक आधार है।

इसी संदर्भ में, जब भारत विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है, तब BHU, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय और IUCTE जैसे संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। हमारे लिए यह गौरव का विषय है कि BHU जैसा प्रतिष्ठित संस्थान, अपनी समृद्ध परंपरा के अनुरूप, नवोदित संस्थानों की *हैंड-होल्डिंग* द्वारा सहयोगात्मक संस्कृति को बढ़ावा दे रहा है। यह वही मूल्य-परंपरा है, जिसे भारतीय गुरु-शिष्य परंपरा सदियों से पोषित करती रही है ज्ञान तभी फलित होता है जब उसे साझा किया जाए और एक-दूसरे को उन्नति के अवसर दिए जाएँ।

आज हमारे बीच काशी की दोनों महत्वपूर्ण विद्यापीठों BHU और संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रज्ञावान कुलपति उपस्थित हैं। माननीय प्रो. अजीत कुमार चतुर्वेदी ने अपनी विद्वत्ता, विनम्रता और दूरदर्शी नेतृत्व से न केवल शिक्षा जगत को नई दिशा प्रदान की है, बल्कि वैश्विक स्तर पर सहयोग और समन्वय की धारा को आगे बढ़ाया है। वहीं प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने भारतीय संस्कृति, भाषिक परंपराओं और अध्यात्मनिष्ठ ज्ञान-चेतना के संरक्षण को अपने जीवन का ध्येय बनाया है, जिससे संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय सांस्कृतिक पुनरुत्थान का एक आलोक–स्तंभ बना है।

हम सभी प्रार्थना करते हैं कि दोनों कुलपतियों का आशीर्वाद IUCTE पर सदैव बना रहे, ताकि यह संस्थान परंपरा और आधुनिकता के संगम के रूप में राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि वैश्विक मंच पर शिक्षक-शिक्षा के क्षेत्र में

मार्गदर्शक की भूमिका निभा सके। मुझे यह साझा करते हुए अत्यंत संतोष हो रहा है कि IUCTE के निदेशक महोदय के नेतृत्व में भारतीय ज्ञान परंपरा तथा डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर निरंतर शैक्षणिक कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।

इन्हीं शब्दों के साथ, मैं एक बार पुनः सभी विशिष्ट अतिथियों, विद्वानों और आगंतुकों का IUCTE परिवार की ओर से हृदय से स्वागत और अभिनंदन करता हूँ। आप सभी की उपस्थिति से यह अवसर वास्तव में गौरवशाली बन गया है। धन्यवाद।

प्रो. बिहारी लाल शर्मा

शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित कार्यक्रम में अपने उद्बोधन के दौरान प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने इस विशेष अवसर को एक अत्यंत सुखद और सार्थक संयोग बताया। उन्होंने कहा कि यह गौरव की बात है कि एक महान शिक्षाविद् द्वारा स्थापित इस संस्थान में, अन्य उत्कृष्ट शिक्षकों के सम्मान का आयोजन उसी दिन किया जा रहा है, जो डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जैसे महान दार्शनिक और शिक्षक के जन्मदिवस का प्रतीक है। उन्होंने इस अवसर को भारतीय ज्ञान-संपदा और सारस्वत परंपरा के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का श्रेष्ठ माध्यम बताया।

प्रो. शर्मा ने भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में श्रद्धा और कृतज्ञता की प्रमुख भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जो व्यक्ति शिक्षा, ज्ञान, और अपने आचरण द्वारा समाज को आलोकित करता है, उसके प्रति सम्मान प्रकट करना हमारी राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा का अविभाज्य तत्व है। उन्होंने कहा कि सम्मानित शिक्षकों का अभिनंदन केवल एक अनुष्ठान नहीं, बल्कि भारतीय समाज की जीवंत परंपरा का द्योतक है।

अपने उद्बोधन में उन्होंने विस्तार से बताया कि 1962 में डॉ. राधाकृष्णन ने स्वयं यह इच्छा व्यक्त की थी कि यदि उनका जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाए, तो यह उनके लिए सबसे बड़ा सम्मान होगा। यह कथन

दर्शाता है कि एक शिक्षक ही शिक्षक की भूमिका का सही मूल्यांकन कर सकता है। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि भारत में गुरु-पूर्णिमा जैसी परंपराएँ सदियों से प्रचलित थीं, परंतु इतिहास के विभिन्न संक्रमणों के कारण इन परंपराओं में व्यवधान आया। ऐसे में 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाना अतीत और वर्तमान को जोड़ने वाला एक सशक्त सेतु बन गया है।

डॉ. राधाकृष्णन के जीवन से जुड़ी घटनाओं को उद्धृत करते हुए प्रो. शर्मा ने उनके अद्वितीय व्यक्तित्व, बुद्धिमत्ता, संयमित वाणी, और सहज उत्तरदायित्व क्षमता का उल्लेख किया। उन्होंने हास-परिहास के माध्यम से गंभीर विषयों को प्रस्तुत करने में राधाकृष्णन की विलक्षण प्रतिभा का उदाहरण देते हुए कहा कि यह कौशल हर शिक्षक में होना अपेक्षित है।

प्रो. शर्मा ने अपने उद्बोधन में शिक्षक के छह मूल गुण- प्रेरक, सूचक, वाचक, दर्शक, शिक्षक और बोधक की विस्तृत व्याख्या की। उन्होंने बताया कि:

प्रेरक वह है जो विद्यार्थी की सुप्त प्रतिभा को जाग्रत कर उसे सीखने के लिए प्रेरित करे।

सूचक वह है जो सही दिशा, अध्ययन की विधि और आगे बढ़ने के मार्ग का संकेत दे।

वाचक वह है जो विषयवस्तु को सरल भाषा में, प्रभावी ढंग से और विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को समझते हुए प्रस्तुत करे।

दर्शक वह है जो अवधारणाओं का यथार्थ और तार्किक रूप से 'दर्शन' करवा सके।

शिक्षक वह है जो अपने आचरण से सिखाता है और जीवन में वही आचरण करता है जो वह दूसरों को सिखाता है।

बोधक वह है जो ज्ञान के माध्यम से विद्यार्थियों में आत्मबोध और आत्म-साक्षात्कार की क्षमता विकसित करे।

उन्होंने इस बात पर बल दिया कि आचरण-सिद्ध शिक्षक ही समाज में वास्तविक परिवर्तन लाने की क्षमता रखता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में प्रो. शर्मा ने कहा कि विकसित भारत @2047 का लक्ष्य केवल नीतिगत दस्तावेजों से नहीं, बल्कि शिक्षकों की सक्रिय भूमिका और उनकी गुणवत्तापूर्ण तैयारी से ही पूरा होगा। उन्होंने कहा कि - शिक्षा भारतीयता से संपृक्त हो,शोध और नवाचार से युक्त हो,स्थानीयता से वैश्विकता तक की दृष्टि विकसित करे,डिजिटल-युग की नेतृत्व क्षमता का विकास करे,और युगीन परिस्थितियों के अनुरूप विद्यार्थियों को तैयार करे। इस पूरी प्रक्रिया के केंद्र में शिक्षक ही सर्वोपरि है। अतः शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

उन्होंने काशी की आध्यात्मिक और शैक्षिक पवित्रता का उल्लेख करते हुए कहा कि यह वह भूमि है जहाँ पंडित मदन मोहन मालवीय और डॉ. राधाकृष्णन जैसे महापुरुषों ने शैक्षिक संस्कृति की नींव को सुदृढ़ किया। यह

भूमि केवल ज्ञान का केंद्र ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक ऊर्जा और प्रेरणा का स्रोत भी है। यहाँ का वातावरण शिक्षकों और विद्यार्थियों के भीतर सृजनात्मक चेतना को जागृत करता है।

अंत में, प्रो. शर्मा ने सभी सम्मानित शिक्षकों, प्रतिभागियों और आयोजकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए आशा की कि इस कार्यक्रम से प्राप्त प्रेरणा सभी को राष्ट्र-निर्माण में और अधिक सक्रिय योगदान हेतु प्रेरित करेगी। उन्होंने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए IUCTE के निदेशक और उनकी टीम का विशेष रूप से धन्यवाद किया और "जय हिंद, जय भारत" के साथ अपने वक्तव्य का समापन किया।

प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी

अपने उद्बोधन में प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी ने सर्वप्रथम निमंत्रण हेतु केन्द्र के निदेशक प्रो. पी.एन. सिंह के प्रति आभार व्यक्त किया, जिन्होंने व्यस्तताओं को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम को 4 सितंबर को आयोजित करने का सुझाव दिया। उन्होंने विनम्रता के साथ सभागार से समयपूर्व प्रस्थान की आवश्यकता व्यक्त करते हुए मंचासीन अतिथियों एवं उपस्थित शिक्षकों से क्षमायाचना की तथा कहा कि वे प्रो. शर्मा एवं प्रो. तिवारी के वक्तव्यों को बाद में रिकॉर्ड किए गए स्वरूप में अवश्य सुनेंगे।

प्रो. चतुर्वेदी ने IUCTE के प्रांगण, निर्माण एवं आधारभूत संरचना की प्रशंसा की और कहा कि यह संस्थान भारत सरकार के उद्देश्यों के अनुरूप उच्च गुणवत्ता के साथ स्थापित किया गया है। उन्होंने प्रधानमंत्री द्वारा व्यक्त इस विचार का स्मरण कराया कि राष्ट्र को उत्कृष्ट शिक्षकों की अत्यंत आवश्यकता है, और इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु इंटर-यूनिवर्सिटी सेंटर स्थापित किए गए हैं ताकि वे शिक्षक प्रशिक्षण, शोध, शिक्षण-शास्त्र और सतत् मूल्यांकन में नेतृत्वकारी भूमिका निभा सकें।

उन्होंने कहा कि एक शिक्षक का कार्य-क्षेत्र अत्यंत व्यस्त रहता है- कक्षा की दैनिक तैयारी, नवीन व्याख्यान-शैली, असाइनमेंट एवं परीक्षाओं का मूल्यांकन, प्रश्न-पत्र निर्माण की सृजनात्मकता आदि को बताते

हुये उन्होंने स्पष्ट किया कि निष्पक्ष मूल्यांकन अत्यंत चुनौतीपूर्ण होते हुए भी अत्यावश्यक है, क्योंकि यही प्रक्रिया विद्यार्थियों की गलतियों की पहचान और उनकी क्षमताओं के विकास में सहायक होती है। यदि शिक्षक मूल्यांकन में निष्पक्षता और पारदर्शिता नहीं बरतता, तो विद्यार्थी का आत्मविश्वास और सीखने की प्रेरणा प्रभावित होती है।

अपने संबोधन में उन्होंने बताया कि समयाभाव के कारण शिक्षक शोध एवं नवाचार पर उतना ध्यान नहीं दे पाते, इसलिए IUCTE जैसे केंद्रों का दायित्व है कि वे नवीन पाठ्यक्रम विकसित करें, विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण आयोजित करें, शिक्षकों के कौशल-विकास हेतु नियमित कार्यक्रम तैयार करें। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि निदेशक महोदय प्रो. पी.एन. सिंह इस दिशा में निरंतर सार्थक कार्य कर रहे हैं।

उन्होंने BHU और IUCTE के बीच सहयोग की संभावनाओं पर बल देते हुए कहा कि सफल साझेदारी परस्पर लाभ में निहित होती है। उनका मत था कि संवाद सतत बना रहना चाहिए। साझेदारी व्यावहारिक और धरातल-संबंधी हो क्योकि एकतरफा लाभ साझेदारी को निष्प्रभावी करता है। उपयोगिता सिद्ध होने पर प्रणालियाँ पदों और व्यक्तियों से परे जाकर दीर्घकालिक बनती हैं। उन्होंने कहा कि किसी प्रणाली को स्थायी, जीवंत और प्रभावी बनाने हेतु पारदर्शिता व विश्वास आवश्यक हैं।

प्रो. चतुर्वेदी ने कहा कि शिक्षक दिवस केवल सम्मान का दिवस नहीं वरन् यह शिक्षक, विद्यार्थी और कक्षा के बीच के संबंधों को पुनर्स्मरण करने का अवसर है। उन्होंने उल्लेख किया कि विश्व स्तर पर अनेक सफल व्यक्तियों ने अपनी सफलता का श्रेय अपने किसी विशेष शिक्षक को दिया है। अतः शिक्षक के लिए यह एक महान अवसर है कि वह विद्यार्थियों के जीवन में सकारात्मक दिशा प्रदान कर सके।

उन्होंने आधुनिक शिक्षा में दो महत्वपूर्ण पहलुओं पर विशेष बल दिया-

1. ऑनलाइन तकनीक का प्रभावी उपयोग

इंटरनेट की व्यापक उपलब्धता का लाभ उठाते हुए विशेषज्ञ शिक्षकों की पहुँच हजारों विद्यार्थियों तक बढ़ सकती है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सर्टिफिकेट कोर्सेज और इमर्शन प्रोग्राम विकसित किए जा सकते हैं। IUCTE की प्रशिक्षण क्षमता तकनीक के माध्यम से कई गुना बढ़ाई जा सकती है

2. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का शिक्षण में समावेशन

उन्होंने चेतावनी दी कि यदि AI को शिक्षा में समुचित रूप से नहीं अपनाया गया, तो शिक्षक अप्रासंगिक हो सकते हैं।

उन्होंने कहा की छात्र AI-आधारित शिक्षण का तेजी से उपयोग कर रहे हैं। शिक्षक की भूमिका तथ्यों के संप्रेषण से आगे बढ़कर प्रेरणा, संवाद, वाद-विवाद, और मूल्याधारित मार्गदर्शन में है। कक्षा इतनी प्रभावी होनी चाहिए कि विद्यार्थियों को "अनिवार्य उपस्थिति" की आवश्यकता महसूस न हो। उन्होंने युवा पीढ़ी के प्रति

सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया और कहा कि विद्यार्थी सीखना चाहते हैं, कई बार वे तकनीकी रूप से शिक्षकों से आगे होते हैं ।उनका एक अच्छा प्रश्न शिक्षक को भी सीखने के लिए प्रेरित करता है, इसलिए कक्षा की सहभागिता दोनों पक्षों के विकास के लिए अनिवार्य है ।

अंत में उन्होंने कहा कि IUCTE की बढ़ती उपयोगिता तभी सिद्ध होगी जब संस्थान को अधिक स्थान और संसाधनों की आवश्यकता महसूस होने लगे। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सभी औपचारिक कार्यक्रम दीर्घकाल में समाज के लिए स्पष्ट रूप से उपयोगी सिद्ध होंगे।

आभार प्रकट करते हुए उन्होंने अपने वक्तव्य का समापन "धन्यवाद, नमस्कार" के साथ किया।

प्रो. प्रेम नारायण सिंह

अपने उद्बोधन में प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने कहा की आज के इस गरिमामय कार्यक्रम में हमारे सारस्वत अतिथि, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के यशस्वी कुलपति, माननीय प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने जिस सरस्वती प्रवाह से हमारे मन-सरोवर को अभिसिंचित किया, वह आज के आयोजन की आत्मा बन गया है। उनकी विद्वत्ता,

सरलता और संस्कृति-साधना का प्रकाश हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। मैं उनके प्रति हृदय से सम्मान प्रकट करता हूँ।

हमारे बीच मुख्य अतिथि के रूप में पधारे काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय प्रो. अजीत कुमार चतुर्वेदी भी यद्यपि अनिवार्य कारणवश मध्य में ही लौट गए, किन्तु उनके द्वारा व्यक्त किए गए विचार और उनका शुभ-संदेश अभी भी हमारे हृदय-पटल पर अंकित है। मैं उनके प्रति भी सादर अभिनंदन, वंदन और नमन प्रकट करता हूँ।

मंच पर उपस्थित मेरे श्रद्धेय गुरु, प्रो. सुभाष चंद्र तिवारी को स्मरण करते हुए मन विशेष रूप से भाव-विभोर हो उठता है। 1982-83 के हमारे बी.एड. सत्र के समय जब उन्होंने अध्यापन का प्रारंभ किया, तब से लेकर आज

तक उनका आचार, ज्ञान और संस्कार हमारे लिए दीप-शिखा के समान मार्गदर्शक रहा है। उनका स्नेह और अनुशासन मेरे व्यक्तिगत एवं शैक्षणिक जीवन की अमिट पूँजी हैं।

आज इस मंच पर जिन आचार्यों का अभिनंदन हुआ प्रो. राम किशोर त्रिपाठी, प्रो. राजनाथ उपाध्याय, प्रो. अरविंद कुमार पांडे, प्रो. हरेंद्र प्रसाद सिंह, प्रो. गीता राय तथा आकस्मिक कारणवश अनुपस्थित प्रो. मृदुलिका अग्रवाल, इन सभी विद्वानों के प्रति मैं हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। इसी प्रकार, महामना कैंसर अस्पताल के निदेशक प्रो. सत्यजीत प्रधान का भी विशेष आभार, जो सदैव पड़ोसी संस्थान के प्रति अपनी सौहार्दपूर्ण उपस्थिति के माध्यम से 'पड़ोसी धर्म' का आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

सभागार में उपस्थित प्रो. राम पूजन पांडे, प्रो. जितेंद्र कुमार, प्रो. विदु द्विवेदी, प्रो. के.के. सिंह, प्रो. ललिता राव, प्रो. रश्मि सिंह, प्रो. अलका रानी, कौशलेंद्र जी, गोरखनाथ तिवारी जी, शैलेंद्र वर्मा जी तथा सभी अन्य सम्मानित विद्वानों का मैं सादर स्वागत और अभिनंदन करता हूँ। समयाभाव को ध्यान में रखते हुए मैं सभी के नाम यहीं विराम देता हूँ, परंतु सम्मान और कृतज्ञता का भाव हृदय में समाहित है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में एक संक्षिप्त परिचय-चित्र प्रदर्शित किया गया, जिसमें माननीय प्रधानमंत्री का यह महत्वपूर्ण संदेश विशेष रूप से ध्यानाकर्षक था कि *"अच्छी शिक्षा इन्फ्रास्ट्रक्चर की नहीं, अच्छे शिक्षकों की मोहताज होती है।"* इसी क्रम में NCERT के पूर्व निदेशक द्वारा कही गई वे प्रेरक पंक्तियाँ कि शिक्षक ही भविष्य का निर्माता है, और राष्ट्र के निर्माण की जिम्मेदारी उसके कंधों पर है हम सभी को आत्मबोध और आत्मपरिवर्तन के लिए प्रेरित करती हैं।

आज के विषय '*अध्यापक की परिवर्तनकारी भूमिका*' पर बोलते हुए यह स्पष्ट हो गया कि वास्तविक परिवर्तन का वाहक केवल वही अध्यापक बन सकता है जो स्वयं पहले परिवर्तन के लिए तैयार हो। 'लॉ ऑफ रेडीनेस' का सिद्धांत यही कहता है कि यदि शिक्षक स्वयं सजग, जिज्ञासु, कर्मनिष्ठ और संवेदनशील नहीं होगा, तो वह अपने विद्यार्थी को भी उस रूप में विकसित नहीं कर पाएगा। अध्यापन केवल पाठ्यक्रम पूरा कर देने का कार्य नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, दृष्टि-विकास और व्यवहार परिष्कार की सतत साधना है।

मुझे अपने प्राथमिक गुरु राधा मोहन सिंह की स्मृति आज भी ताज़ा है, जिनकी दृढ़ता, अनुशासन और समर्पण ने सैकड़ों विद्यार्थियों के जीवन को नई दिशा दी। खेल, परिश्रम और निरंतर अभ्यास के माध्यम से वे बच्चों में प्रतिबद्धता, आत्मविश्वास और आशावादिता का निर्माण करते थे। आज भी उनका नाम उत्कृष्टता का पर्याय माना जाता है। यह उदाहरण बताता है कि एक सच्चा शिक्षक पढ़ाता नहीं प्रेरित करता है।

अध्यापक की भूमिका केवल ज्ञान-प्रदाता की नहीं, बल्कि प्रेरक, सूचक, वाचक, दर्शक और बोधक सभी गुणों से युक्त जीवन-निर्माता की है। ज्ञान का हस्तांतरण तो द्वितीयक है; वास्तव में महत्वपूर्ण है विद्यार्थी में *अभिवृत्ति*

का निर्माण। ठीक वही अभिवृत्ति जो उसे जीवन में संघर्ष, सेवा, सत्यनिष्ठा और संवेदना के मार्ग पर स्थिर रखती है।

गुरुजी ने कुछ कठोर बातें भी कही होंगी, परन्तु वे वास्तविकता के धरातल पर आधारित थीं। आज जब हम केवल नौकरी को साधन बनाकर जीवन जीने की प्रवृत्ति में उलझ जाते हैं, तब यह स्मरण रखना आवश्यक है कि शिक्षा एक पवित्र ऋण है जो हम पिछली पीढ़ी से प्राप्त करते हैं और अगली पीढ़ी को चुकाते हैं। यदि हमने इस ऋण का उत्तरदायित्वपूर्वक निर्वाह नहीं किया, तो यह समाज और राष्ट्र दोनों के प्रति अन्याय होगा। 'जो लिया है, उसे लौटाना ही शिक्षक का धर्म है।' यही भाव शिक्षक दिवस का सार है।

अंत में मैं यह कहूँगा कि संस्था हो, समाज हो या परिवार - हर महान कार्य टीम आधारित होता है। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में जिन सभी संयोजकों, सह-संयोजकों, तकनीकी टीम, मीडिया टीम, प्रशासनिक और शैक्षणिक साथियों ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से योगदान दिया, उन सभी को मैं हृदय से साधुवाद देता हूँ।

आप सभी का हृदय से आभार, धन्यवाद और अभिनंदन।

सम्मानित अध्यापकों का उद्बोधन

प्रो. अरविन्द पाण्डेय

सम्मानित होने वाले आचार्यो में से प्रो. अरविन्द पाण्डेय ने कहा की आज प्रो. चतुर्वेदी जी द्वारा ए.आई. पर

उठाया गया प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण है। यद्यपि ए.आई. हमारी सहायता करेगा, सूचना देगा, लेख लिख देगा, परंतु वह करुणा, सहानुभूति, क्षमा-भाव और संवेदनशीलता उत्पन्न नहीं कर सकता।

शिक्षक केवल ज्ञान का संचार नहीं करता, वह विद्यार्थी के मनोभावों को समझता है। यदि विद्यार्थी नहीं आया तो क्यों नहीं आया? यदि उत्तर नहीं दे पाया तो क्या कारण रहा? यह समझना मशीन का नहीं, अध्यापक का कार्य है। इसलिए, हमें तकनीक का उपयोग करना चाहिए, परंतु उस पर पूरी तरह निर्भर नहीं होना चाहिए। ए.आई. सहयोगी है, प्रतिस्थापक नहीं। आप सभी के आमंत्रण और स्नेह के लिए मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। धन्यवाद।

प्रो. सुभाष चन्द्र तिवारी

अध्यक्षीय आसन को प्रणाम करते हुये प्रो. तिवारी ने कहा की आज प्रौद्योगिकी, विशेषकर आर्टिफ़िशियल

इंटेलिजेंस, तेजी से शिक्षा की परिभाषा बदल रही है। परंतु विचारणीय प्रश्न यह है कि क्या शिक्षा केवल सूचना प्रदान करने तक सीमित है? AI ज्ञान दे सकता है, उत्तर दे सकता है, लेख लिख सकता है लेकिन वह करुणा, संवेदनशीलता, क्षमा और सहानुभूति कहाँ से लाएगा? और यही मानवीय गुण अध्यापक को अध्यापक बनाते हैं। हम अक्सर कहते हैं कि प्राचीन काल में शिक्षा जंगलों में होती थी, पर व्यावहारिक तथ्य यह है कि हमारे गुरुकुल समाज से जुड़े हुए थे। वहाँ केवल पाठ्य-वाचन नहीं, चरित्र-निर्माण, नैतिकता और संस्कृति का संरक्षण प्रमुख था। आज का संकट यही है कि आधुनिकता की दौड़ में हम अपनी सांस्कृतिक जड़ों और नैतिक मूल्यों को पीछे छोड़ते जा रहे हैं। शिक्षा का उद्देश्य केवल मस्तिष्क भरना नहीं, हृदय गढ़ना है। यदि शिक्षा से चरित्र न बने, समाज में परिवर्तन न आए, राष्ट्र प्रेम की भावना न जागे, तो वह शिक्षा अधूरी है। आज हम तकनीक को अवश्य अपनाएँ, क्योंकि "शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्रचिन्ता प्रवर्तते" रक्षा और उन्नति के लिए तकनीक आवश्यक है। लेकिन यदि शिक्षा में भारतीयता, संस्कृति, नैतिकता और मानवीय मूल्य स्थान

नहीं पाएंगे, तो केवल तकनीक राष्ट्र के निर्माण में सहायक नहीं हो सकती। हमारे पुराण, उपनिषद, संवाद-परंपरा- सब प्रश्नोत्तर शैली पर आधारित हैं। शिक्षण विधियाँ आज भी वही हैं; अंतर केवल दृष्टिकोण और प्रयोग का है।

इसलिए आवश्यक है कि शिक्षा परंपरा और तकनीक दोनों का संतुलित समन्वय हो। अंत में, मेरा विनम्र आग्रह है कि शिक्षा को भारतीयता से जोड़िए, नैतिकता को जीवन से जोड़िए और तकनीक को साधन मानिए-लक्ष्य नहीं। तभी शिक्षा सचमुच राष्ट्र और समाज का निर्माण कर सकेगी।

आप सभी का धन्यवाद।

प्रो. राम किशोर त्रिपाठी

शिक्षक दिवस के अवसर पर आज की इस चर्चा का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि सच्चा शिक्षक कभी रिटायर नहीं होता। सेवा बंधन समाप्त हो सकता है, कार्यालय से निवृत्ति मिल सकती है, परंतु शिक्षण का दायित्व जीवन के अंतिम क्षण तक रहता है। जब लोग पूछते हैं कि क्या आप रिटायर हो गए, तो मेरा उत्तर यही होता है कि *रिटायर नहीं हुआ, केवल बंधन से मुक्त हुआ हूँ।* शिक्षक का कर्तव्य नौकरी की सीमा में बंधा नहीं होता; वह एक जीवनपर्यंत साधना है, और उसका कोई अंत नहीं।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षक केवल विद्या का प्रदाता नहीं, बल्कि चरित्र निर्माता भी होता है। यही भारतीय शिक्षा प्रणाली की मूल विशेषता है। ज्ञान तो कोई भी दे सकता है, पर चरित्र निर्माण वही करेगा, जिसका स्वयं का जीवन चरित्रवान हो। विद्यार्थी शिक्षक के अधिक सन्निकट रहता है, इसलिए वह शिक्षक का अनुकरण करता है। जिस प्रकार पुत्री माता का अधिक अनुसरण करती है क्योंकि वह उसके निकट रहती है, उसी प्रकार विद्यार्थी शिक्षक के जीवन, आचरण और व्यवहार से प्रेरणा ग्रहण करता है। इसीलिए शिक्षक को स्वयं *आदर्श* होना आवश्यक है।

उपनिषदों में दीक्षा-समारोह के अंत में गुरु यह वचन देते हैं "यानि अस्माकं सुचरितानि तानि त्वया उपास्यानि" अर्थात् मेरे जो सुचरित्र हैं, उन्हीं का तुम अनुकरण करना। और यदि मुझमें कोई दुचरित्र हो तो उसे ग्रहण मत करना। यह किसी भी सच्चे गुरु की ईमानदारी और विनम्रता का प्रतीक है। यही सच्चे शिक्षक का चरित्र है- पहले स्वयं आचरण, फिर उपदेश।

गुरु के दोषों के विषय में भी शास्त्र बहुत संतुलित मार्ग बताता है। गुरु के दोषों का सार्वजनिक बखान नहीं करना चाहिए। यदि गुरु में कोई त्रुटि दिखाई दे, तो एकांत में विनम्रता से कहना चाहिए। यदि कहना पर भी गुरु उस दोष को न छोड़े, तब ही शास्त्र गुरु-परित्याग की अनुमति देता है। इससे स्पष्ट है कि गुरु का पद अत्यंत पवित्र और उत्तरदायित्वपूर्ण है।

इसलिए शास्त्र दो गुणों पर बल देता है "श्रोत्रिय" और "ब्रह्मनिष्ठ"। अर्थात् गुरु वेद-शास्त्र का ज्ञाता भी हो और ब्रह्म की साधना में निष्ठावान भी। उसके भीतर आचार की पवित्रता हो, तभी वह सभ्य और संस्कारित शिष्य तैयार कर सकता है। क्योंकि ज्ञान देना आसान है, परंतु character और conduct को गढ़ना केवल वही शिक्षक कर सकता है जिसके अपने जीवन में ठोस मूल्य और अनुशासन मौजूद हों।जो सच्चरित्र होगा, वही देश, समाज और समस्त मानवता को सही दृष्टि से समझेगा और आगे बढ़ाएगा।

इन्हीं भावों के साथ, गुरु के प्रति श्रद्धा और उसके कर्तव्य के महत्व को स्मरण करते हुए, मैं अपनी वाणी को यहीं विराम देता हूँ।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

प्रो. राजनाथ उपाध्याय

प्रो. राजनाथ उपाध्याय ने अपने संबोधन में कहा कि विद्यार्थियों को पढ़ाना सरल है, परंतु शिक्षकों को संबोधित करना कठिन, क्योंकि प्रत्येक शिक्षक अपनी विशिष्ट शैली, समझ और अनुभव के साथ पढ़ाता है और किसी

एक विधि को सभी पर लागू नहीं किया जा सकता। शिक्षक को सबसे पहले अपने विषय का गहन ज्ञान होना चाहिए और उसे विद्यार्थी को उतना ही बताना चाहिए जितना वह ग्रहण कर सके; पाठ्य-पुस्तक से बहुत दूर जाना अनुचित है, और यदि जाए तो छात्र को सटीक संदर्भ अवश्य बताए। उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन का उल्लेख करते हुए बताया कि कुछ शिक्षक अपनी तैयारी और अद्भुत अभिव्यक्ति के कारण छात्रों के मन में अमिट छाप छोड़ देते थे, जबकि आज कई शिक्षक बिना तैयारी के कक्षा में चले जाते हैं। विषय विशेष, विशेषकर तकनीकी व तथ्यात्मक विषयों में तैयारी अत्यंत आवश्यक होती है, जबकि सामाजिक विज्ञान में शिक्षक की शैली और स्पष्टता अधिक महत्व रखती है। उन्होंने बताया कि कई शिक्षक समय पूरा होने का इंतज़ार करते हैं और 45 मिनट की कक्षा में 15 मिनट के बाद ही निकल आने की सोचने लगते हैं, जबकि अच्छे शिक्षक वही हैं जो समय का सदुपयोग कर विद्यार्थियों को वास्तव में कुछ देने की भावना से पढ़ाते हैं। उन्होंने उल्लेख किया कि कई कक्षाओं में छात्र विशेष शिक्षकों को सुनने अन्य सेक्शनों से भी आ जाते हैं, यह

शिक्षक की क्षमता और प्रभाव का प्रमाण है। मूल्यांकन प्रणाली पर उन्होंने कहा कि कई शिक्षक बड़ी संख्या में उत्तर-पुस्तिकाएँ जल्दी-जल्दी जाँच देते हैं, जिससे गुणवत्ता प्रभावित होती है। रिसर्च निर्देशन में भी 90% शिक्षक पुराने शोध का सहारा लेकर औपचारिकता निभा देते हैं, जिससे शोध की गुणवत्ता घटती है; शोधार्थियों को अनावश्यक रूप से परेशान करना भी एक समस्या है। उन्होंने स्वीकार किया कि शिक्षण संस्थानों में उपस्थिति और उत्तरदायित्व का अंतर साफ दिखता है, उच्च कक्षाओं में शिक्षक जाते हैं पर निम्न कक्षाओं में उपेक्षा होती है, जबकि सभी को समान वेतन मिलता है; यह सामूहिक जिम्मेदारी की कमी को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि शिक्षक का महत्व तभी है जब वह कक्षा, व्यवहार और अनुसंधान—तीनों स्तरों पर ईमानदारी से कार्य करे; विद्यार्थी शिक्षक के हर आचरण को देखता और अपनाता है। अंत में उन्होंने कहा कि उनका उद्देश्य किसी की आलोचना नहीं बल्कि शिक्षा में सुधार का आग्रह है और उन्होंने सभी के प्रति विनम्र आभार प्रकट किया।

प्रो. हरिंद्र प्रसाद सिंह

प्रो. हरिंद्र प्रसाद सिंह ने अपने उद्बोधन में समारोह के अध्यक्ष एवं IUCTE के निदेशक प्रो. पी.एन. सिंह,

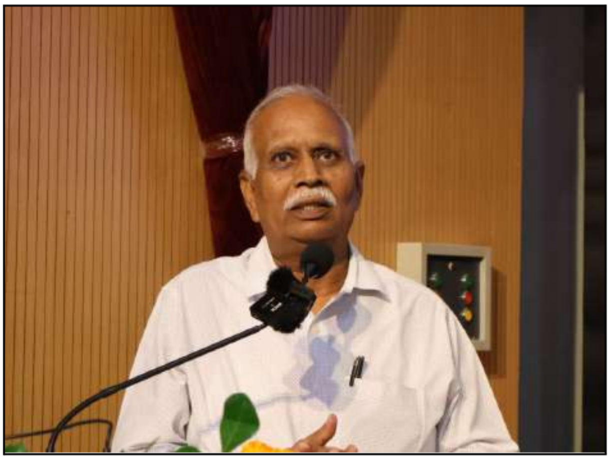

संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति तथा प्रो. सुभाष चंद्र त्रिपाठी सहित सभी उपस्थित विद्वानों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि कृषि विज्ञान के विद्यार्थी के रूप में उन्होंने विज्ञान से लेकर गणित, सांख्यिकी और अर्थशास्त्र तक विविध विषयों का अध्ययन किया और आज जब पाठ्यक्रमों की संरचना पर चिंतन करते हैं तो महसूस होता है कि भारत के विद्यार्थियों को अपने राष्ट्र, इतिहास, भूगोल, महापुरुषों और सांस्कृतिक धरोहर के बारे में अत्यंत सीमित ज्ञान मिलता है। अतः प्रत्येक स्तर पर यहाँ तक कि पीएचडी तक भारतीय संस्कृति एवं भारतीय इतिहास से संबंधित एक अनिवार्य पाठ्य-पेपर होना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों में अपने देश के प्रति भावनात्मक और बौद्धिक संबद्धता विकसित हो तथा वे समझ सकें कि राष्ट्र, समाज और विश्व के उत्थान में उनका योगदान क्या हो सकता है। उन्होंने दूसरा महत्वपूर्ण बिंदु स्वास्थ्य-शिक्षा का उठाया और कहा कि प्राचीन भारतीय जीवन-पद्धतियाँ अत्यंत वैज्ञानिक थीं; उदाहरण के लिए गाँवों में नीम या बबूल की दातून से दाँत साफ करना पूर्णतः वैज्ञानिक पद्धति थी, जबकि आधुनिक ब्रश का उपयोग करते हुए आज 90% लोगों के दाँत किसी न किसी रूप में क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। इस छोटे से उदाहरण से स्पष्ट होता है कि पारंपरिक भारतीय पद्धतियाँ अनुभव-आधारित वैज्ञानिकता से परिपूर्ण थीं और स्वास्थ्य शिक्षा को विद्यालय से लेकर उच्च स्तर तक पाठ्यक्रम में स्थान मिलना चाहिए। तीसरे बिंदु के रूप में उन्होंने

वित्तीय साक्षरता (Financial Literacy) की आवश्यकता रेखांकित करते हुए कहा कि अधिकांश लोग अपनी नियमित आय से भी सुदृढ़ बचत और वित्तीय संरचना बना सकते हैं, किंतु वित्तीय ज्ञान के अभाव में ऐसा नहीं हो पाता; और जिनके पास यह ज्ञान होता भी है, वे प्रायः इसे साझा नहीं करते। हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है कि “यस्य वित्तं स नरः कुलीनः” अर्थात गुण, ज्ञान और आचरण सब धन के आधार पर ही प्रतिष्ठित माने जाते हैं; इसलिए विद्यार्थियों और नागरिकों को वित्तीय प्रबंधन का व्यावहारिक प्रशिक्षण मिलना अत्यंत आवश्यक है। इसी भाव के साथ उन्होंने संस्थान और सहयोगियों के प्रति पुनः धन्यवाद व्यक्त किया कि उन्हें अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर मिला और श्रोताओं का धैर्यपूर्वक सुनने हेतु आभार ज्ञापित किया।

प्रो. गीता राय

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र (IUCTE) के मंच से प्रो. गीता राय ने शिक्षक की भूमिका को केवल एक 'पेशे' या 'सेवा की शर्तों' तक सीमित न रखकर उसे एक मर्यादित व्यक्तित्व के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने कहा कि आज शिक्षक सुरक्षा और सुविधाओं की चिंता अधिक करता है, जबकि शिक्षक का वास्तविक आधार उसका आचरण होना चाहिए। उनके अनुसार, यदि व्यक्ति में आचरण की सभ्यता नहीं है, तो वह केवल कहलाने मात्र के लिए शिक्षक है।

प्रो. राय ने शिक्षक के भीतर मानवीय संवेदनाओं के संगम को अनिवार्य बताते हुये कहा की हृदय माँ की तरह कोमल, अनुशासन पिता की तरह कठोर और मार्गदर्शन बड़ों की तरह ममतामयी हो। उन्होंने ज्ञानार्जन की प्रक्रिया को चार चरणों में स्पष्ट किया: जानकारी, समझदारी, ईमानदारी और साझेदारी। उनका मानना है कि जब तक हमारी जानकारी 'समझदारी' में नहीं बदलती और समझदारी 'सांस्कृतिक साझेदारी' के माध्यम से 'देनदारी' (समाज को कुछ देने की क्षमता) तक नहीं पहुँचती, तब तक शिक्षा व्यर्थ है।

अपने व्यक्तिगत संस्मरणों को साझा करते हुए उन्होंने लोक परंपराओं के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने मंच पर माला के स्थान पर 'खोइच्छा' (आंचल में आशीष) लेने को भारतीय लोक संस्कृति के प्रति समर्पण का प्रतीक बताया। उन्होंने निष्कर्ष दिया कि महान उपलब्धियों से पहले एक मनुष्य का संस्कारवान होना आवश्यक है। अंततः, उन्होंने भावी शिक्षकों से आग्रह किया कि वे युगीन आवश्यकताओं और अपनी समृद्ध विरासत के बीच एक संतुलित व मर्यादित जीवन पद्धति को अपनाएं।

इस कार्यक्रम का शुभारम्भ माता सरस्वती, महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय एवं स्वामी विवेकानंद जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। मंगलाचरण डॉ. राजा पाठक, स्वागत भाषण संकाय प्रमुख, शैक्षणिक एवं शोध प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. ज्ञानेंद्र सिंह ने किया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया। इस कार्यक्रम में अन्य शैक्षणिक संस्थानों के अध्यापकों एवं छात्रों सहित केन्द्र के सभी अध्यापकों, अधिकारियों एवं कर्मचरियों की उपस्थिति रही।

समाचार पत्रों में

शिक्षकों को शिक्षण पद्धति में सुधार एवं एआई के प्रभावी उपयोग पर ध्यान देना चाहिए - प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदी

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदी ने कहा कि विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए शिक्षकों को अपनी शिक्षण और मूल्यांकन पद्धति में निरंतर सुधार करना चाहिए। वे अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आईयूसीटीई) में शिक्षक दिवस की

आईयूसीटीई में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर हुआ सम्मान समारोह, सेवानिवृत्त शिक्षकों को किया गया सम्मानित

पूर्व संध्या पर आयोजित शिक्षक सम्मान समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने ऑनलाइन शिक्षा की बढ़ती भूमिका पर बल देते हुए कहा कि शिक्षकों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का प्रभावी उपयोग सीखना होगा, जिससे शिक्षा के नए आयाम खुलेंगे। समारोह के मुख्य वक्ता सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर प्रोफेसर बिहारी लाल शर्मा ने कहा कि सच्चा शिक्षक अपने आचरण से शिक्षा देता है। उन्होंने शिक्षकों के पांच लक्षण- प्रेरक, सूचक, वाचक, दर्शक और बोधक की व्याख्या करते हुए कहा कि इन गुणों से परिपूर्ण शिक्षक ही विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण और शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को पूर्ण कर सकते हैं। आईयूसीटीई के निदेशक प्रोफेसर प्रेम नारायण सिंह ने कहा कि अच्छे शिक्षक ही अच्छे विद्यार्थी तैयार करेंगे। शिक्षा वह कर्ज है जिसे हम पिछली पीढ़ी से लेते हैं और अगली पीढ़ी को चुकाते हैं। इस अवसर पर छह सेवानिवृत्त आचार्यों को शिक्षा में उल्लेखनीय योगदान हेतु सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में प्रोफेसर सुभाष चन्द्र तिवारी, प्रोफेसर राम किशोर त्रिपाठी, प्रोफेसर राजनाथ उपाध्याय, प्रोफेसर अरविन्द कुमार पाण्डेय, प्रोफेसर हरीन्द्र प्रसाद सिंह और प्रोफेसर गीता राय ने भी विचार रखे। अतिथियों का स्वागत प्रोफेसर आशीष श्रीवास्तव ने किया, धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर अजय कुमार सिंह और संचालन डॉक्टर सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया।

आईयूसीटीई में बताए गए शिक्षकों के 5 गुण 3

वाराणसी। अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आईयूसीटीई) में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर शिक्षक दिवस एवं शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। बीएचयू के कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी और संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने शिक्षक सम्मान समारोह में आए बीएचयू, काशी विद्यापीठ और संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के छह सेवानिवृत्त आचार्यों को शिक्षा में उल्लेखनीय कार्य के लिए सम्मानित किया। प्रो. चतुर्वेदी ने कहा कि शिक्षकों को एआई के प्रभावी उपयोग पर भी ध्यान देने की जरूरत है। प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने कहा सच्चा शिक्षक वही है जो अपने आचरण से शिक्षा दे। शिक्षक में पांच लक्षण होते हैं, प्रेरक, सूचक, वाचक, दर्शक और बोधक। निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने कहा कि अच्छे शिक्षक ही अच्छे विद्यार्थी तैयार करेंगे।

आज पेज नं 5

अमर उजाला कॉम्पेक्ट पेज नं 3

शिक्षकों के पांच गुण : प्रेरक, सूचक, वाचक, दर्शक और बोधक

आईयूसीटीई में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर शिक्षक सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

माई सिटी रिपोर्टर

वाराणसी। अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आईयूसीटीई) में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। बीएचयू के कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी और संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने बीएचयू, काशी विद्यापीठ और संस्कृत विवि के छह सेवानिवृत्त आचार्यों को शिक्षा में उल्लेखनीय कार्य के लिए सम्मानित किया।

प्रो. चतुर्वेदी ने कहा कि शिक्षकों को एआई के प्रभावी उपयोग पर भी ध्यान देने की जरूरत है। प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने कहा कि शिक्षक में पांच लक्षण होते हैं, प्रेरक, सूचक, वाचक, दर्शक और बोधक।। निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने कहा कि अच्छे शिक्षक ही अच्छे विद्यार्थी तैयार करेंगे। वहीं सम्मानित शिक्षकों ने कहा एआई के गैप को भरने में शिक्षक ही सहायक हैं।

आईयूसीटीई में शिक्षक दिवस की पूर्व संख्या पर सम्मानित शिक्षक। संवाद

इन्हें मिला सम्मान : संविवि के प्रो. सुभाष चंद्र तिवारी व प्रो. राम किशोर त्रिपाठी, विद्यापीठ के प्रो. राजनाथ उपाध्याय व प्रो. अरविंद कुमार पांडेय और बीएचयू के प्रो. हरींद्र प्रसाद सिंह व प्रो. गीता राय।

शिक्षक ही समाज की असली धुरी : बीएचयू के सबोधि सभागार में मुख्य अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष पूनम मौर्या ने कहा कि शिक्षक ही समाज की असली धुरी है। जब शिक्षक का सम्मान होगा राष्ट्र के प्रति जिम्मेदार नागरिक तैयार होंगे।

चरित्र-संस्कार का निर्माण करते हैं गुरु

वाराणसी। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं है व्यक्ति के अंदर चरित्र का निर्माण करना है। गुरु अपने शिष्यों में चरित्र, संस्कार और अनुशासन का निर्माण करते हैं। ये बातें बीएचयू के प्रो. शंकर मिश्र ने रानी पद्मावती तारा योगतंत्र आदर्श संस्कृत महाविद्यालय में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित कार्यक्रम में कहीं। ज्योतिष विभाग के आचार्य डॉ. विजय कुमार पांडेय, डॉ. माधवेंद्र पांडेय और प्रेमचंद्र ठाकुर ने भी अपने विचार रखे। अध्यक्षता प्रभारी प्राचार्य डॉ. कमलेश झा ने की। उत्आदर्श शिक्षक सम्मान डॉ. विवेकानंद झा को मिला। संचालन डॉ. प्रमोद पाठक व धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रभुनारायण उपाध्याय ने किया। ब्यूरो

आईआईटी में रोपे जाएंगे 6000 पौधे

वाराणसी। शिक्षक दिवस आईआईटी (बीएचयू) में एक पेड़ गुरु के नाम के तहत 0.2 हेक्टेयर जमीन पर वन विभाग के ओर से 6000 पौधे रोपे जाएंगे। आईआईटी (बीएचयू) में मियावाकी तकनीक से वन विकसित होगा। प्रभागीय वन अधिकारी स्वाति श्रीवास्तव ने बताया कि काशी में 11 स्थानों पर विशिष्ट वन स्थापित हो चुके हैं। संवाद

अमर उजाला माई सिटी पेज नं 4

शिक्षकों को शिक्षण पद्धति में सुधार एवं एआई के प्रभावी उपयोग पर ध्यान देना चाहिए - प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदी

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदी ने कहा कि विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए शिक्षकों को अपनी शिक्षण और मूल्यांकन पद्धति में निरंतर सुधार करना चाहिए। वे अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आईयूसीटीई) में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित शिक्षक सम्मान समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने ऑनलाइन शिक्षा की बढ़ती भूमिका पर बल देते हुए कहा कि शिक्षकों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का प्रभावी उपयोग सीखना होगा, जिससे शिक्षा के नए आयाम खुलेंगे। समारोह के मुख्य वक्ता सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर प्रोफेसर बिहारी लाल शर्मा ने कहा कि सच्चा शिक्षक अपने आचरण से शिक्षा देता है। उन्होंने शिक्षकों के पांच लक्षण- प्रेरक, सूचक, वाचक, दर्शक और बोधक की व्याख्या करते हुए कहा कि इन गुणों से परिपूर्ण शिक्षक ही विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण और शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को पूर्ण कर सकते हैं। आईयूसीटीई के निदेशक प्रोफेसर प्रेम नारायण सिंह ने कहा कि अच्छे शिक्षक ही अच्छे विद्यार्थी तैयार करेंगे। शिक्षा वह कर्ज है जिसे हम पिछली पीढ़ी से लेते हैं और अगली पीढ़ी को चुकाते हैं। इस अवसर पर छह सेवानिवृत्त आचार्यों को शिक्षा में उल्लेखनीय योगदान हेतु सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में प्रोफेसर सुभाष चन्द्र तिवारी, प्रोफेसर राम किशोर त्रिपाठी, प्रोफेसर राजनाथ उपाध्याय, प्रोफेसर अरविन्द कुमार पाण्डेय, प्रोफेसर हरीन्द्र प्रसाद सिंह और प्रोफेसर गीता राय ने भी विचार रखे। अतिथियों का स्वागत प्रोफेसर आशीष श्रीवास्तव ने किया, धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर अजय कुमार सिंह और संचालन डॉक्टर सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया।

आईयूसीटीई में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर हुआ सम्मान समारोह, सेवानिवृत्त शिक्षकों को किया गया सम्मानित

शिक्षक दिवस एवं शिक्षक सम्मान समारोह का भव्य आयोजन

एजेंसी। वाराणसी

अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आईयूसीटीई), वाराणसी में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर "शिक्षक दिवस एवं शिक्षक सम्मान समारोह" का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण, मां सरस्वती, महामना पं. मदन मोहन मालवीय एवं डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की प्रतिमा पर पुष्पार्पण तथा दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी तथा सारस्वत अतिथि एवं मुख्य वक्ता सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा उपस्थित रहे। समारोह की अध्यक्षता आईयूसीटीई के निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने की। समारोह में शिक्षा क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु 6 सेवानिवृत्त आचार्यों को सम्मानित किया गया। सम्मानित आचार्यों में शामिल रहे प्रो. सुभाष चन्द्र तिवारी, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रो. राम किशोर त्रिपाठी, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रो. राजनाथ उपाध्याय, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, प्रो. अरविन्द कुमार पाण्डेय, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, प्रो. हरीन्द्र प्रसाद सिंह, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, प्रो. गीता राय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी ने कहा कि विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए शिक्षकों को अपनी शिक्षण एवं मूल्यांकन पद्धति में नवाचार लाना चाहिए। उन्होंने ऑनलाइन शिक्षा एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रभावी उपयोग पर विशेष बल दिया। मुख्य वक्ता, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने कहा कि "सच्चा शिक्षक वही है जो अपने आचरण से शिक्षा देता है।" उन्होंने शिक्षकों के पाँच लक्षण– प्रेरकः, सूचकः, वाचकः, दर्शकः एवं बोधकः की व्याख्या करते हुए उनके महत्व को स्पष्ट किया। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने कहा कि "अच्छे शिक्षक ही अच्छे विद्यार्थी तैयार करेंगे।" उन्होंने शिक्षा को चरित्र निर्माण का माध्यम बताते हुए कहा कि "शिक्षा वह कर्ज है जिसे हम पिछली पीढ़ी से लेते हैं और अगली पीढ़ी को चुकाते हैं।" सम्मानित आचार्यों ने भी अपने विचार रखते हुए शिक्षा में नैतिकता, मूल्य, राष्ट्रप्रेम, वित्तीय साक्षरता, स्वास्थ्य शिक्षा, करुणा एवं संवेदनशीलता जैसे पहलुओं पर बल दिया।

Rastriya Naveen Mela, Pg-09 Date: 05.09.2025

शिक्षण व मूल्यांकन पर विशेष ध्यान दें शिक्षक

बोले प्रो. चतुर्वेदी

अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर समारोह

शिक्षा के क्षेत्र में महती योगदान देने वाले अवकाश प्राप्त छह गुरुजनों का हुआ सम्मान

वाराणसी। बीएचयू के कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी ने कहा कि विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए शिक्षकों को अपनी शिक्षण और मूल्यांकन पद्धति पर विशेष ध्यान देना चाहिए। उन्होंने ऑनलाइन शिक्षा के महत्व पर बल देते हुए कहा कि शिक्षकों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रभावी उपयोग पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है जिससे वे अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार कर सकते हैं।

यह बातें उन्होंने अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर गुरुवार को शिक्षक दिवस एवं शिक्षक सम्मान समारोह में बतौर मुख्य अतिथि कही। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण व मां सरस्वती, महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी तथा डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी की प्रतिमा पर पुष्पार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। इस मौके पर समारोह में छह सेवानिवृत्त आचार्यों को शिक्षा में उल्लेखनीय कार्य के लिए केन्द्र द्वारा सम्मानित किया गया। समारोह की अध्यक्षता आईयूसीटीई के निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने की।

सारस्वत अतिथि व मुख्य वक्ता संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने कहा कि सच्चा शिक्षक वही है, जो अपने आचरण से शिक्षा देता है। उन्होंने शिक्षकों के पांच लक्षणों- प्रेरकः, सूचकः, वाचकः, दर्शकः, बोधकः की व्याख्या करते हुए बताया कि शिक्षकों का इन गुणों से परिपूर्ण होना न केवल विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक है, बल्कि शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को भी पूर्ण करता है। अध्यक्षीय उद्बोधन में केंद्र के निदेशक उद्बोधन में प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने कहा कि अच्छे शिक्षक ही अच्छे विद्यार्थी तैयार करेंगे। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य चरित्र निर्माण है और इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शिक्षक को अपनी भूमिका पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ निभानी चाहिए।

सम्मानित आचार्यों में संविवि के पूर्व आचार्य प्रो. सुभाष चन्द्र तिवारी, प्रो. राम किशोर त्रिपाठी, काशी विद्यापीठ के प्रो. राजनाथ उपाध्याय, प्रो. अरविन्द कुमार पाण्डेय, बीएचयू के प्रो. हरीन्द्र प्रसाद सिंह व प्रो. गीता राय शिक्षकों के महत्व को विस्तार से बताया।

अतिथियों का स्वागत प्रो. आशीष श्रीवास्तव, धन्यवाद ज्ञापन प्रो. अजय कुमार सिंह, संचालन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया। इस कार्यक्रम में प्रो. सत्यजीत प्रधान, प्रो. रामपूजन तिवारी, प्रो. राजनाथ, प्रो. ललिता राव, प्रो. जितेंद्र शाही, डॉ. गोरख नाथ तिवारी, प्रो. ओपी चौधरी, डॉ. रमेश यादव, प्रो. रश्मि सिंह, प्रो. अल्का रानी, डॉ. आकाश रंजन, डॉ. कौशलेंद्र सिंह, डॉ. विजय कुमार सिंह, प्रो. शैलेन्द्र वर्मा आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समन्वयन प्रो. अजय कुमार सिंह, सह-समन्वयन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी व डॉ. अनिल कुमार ने किया।

Teachers to be felicitated today

PIONEER NEWS SERVICE
Varanasi

The Inter-University Centre of Teacher Education (IUCTE), BHU, will organise Teachers' Day and Teachers' Felicitation Ceremony' on the eve of Teachers' Day on September 4 from 10 am. The chief guest of this ceremony will be Vice-Chancellor of BHU Prof Ajit Kumar Chaturvedi, while the guest of honour will be the V-C of Sampurnanand Sanskrit University Prof Bihari Lal Sharma. Both the guests will also address the gathering on the 'transformative role of teachers in National Education Policy 2020'.

The programme will be presided over by IUCTE Director Prof Prem Narayan Singh. On the occasion, retired teachers who have made invaluable contribution in the field of education, including Prof Subhash Chandra Tiwari (SSU), Prof Ram Kishore Tripathi (SSU), Prof Rajnath Upadhyay (Mahatma Gandhi Kashi Vidyapeeth) and others.

The Pioneer, Page-04, Date:04.09.2025

वाराणसी, शुक्रवार, 5 सितम्बर, 2025

शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर छह आचार्यों को किया गया सम्मानित

वाराणसी (जनवार्ता)। सुन्दरपुर स्थित अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र के सभागार में गुरुवार को शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर शिक्षक दिवस एवं शिक्षक सम्मान समारोह आयोजित हुआ। जिसका शुभारम्भ मंगलाचरण, पुष्पार्पण एवं दीप प्रज्वलन से हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि बीएचयू कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी एवं विशिष्ट अतिथि व मुख्य वक्ता सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा उपस्थित रहे। समारोह की अध्यक्षता केंद्र निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने की।

इस अवसर पर 6 सेवानिवृत्त आचार्यों प्रो. सुभाष चन्द्र तिवारी, प्रो. राम किशोर त्रिपाठी, प्रो. राजनाथ उपाध्याय, प्रो. अरविन्द कुमार पाण्डेय, प्रो. हरीन्द्र प्रसाद सिंह और प्रो. गीता राय को शिक्षा में योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इस दौरान वक्ताओं ने शिक्षक के चरित्र, करुणा, संवेदनशीलता, राष्ट्रप्रेम और विद्यार्थियों को दिशा देने में उनकी भूमिका पर बल दिया। मुख्य अतिथि का कहना है कि शिक्षण पद्धति में सुधार और एआई के प्रभावी उपयोग की आवश्यकता बताई। जिसमें विशिष्ट अतिथि ने कहा कि सच्चा शिक्षक वही है जो आचरण से शिक्षा देता है। जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो. सिंह ने शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण बताया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रो. अजय कुमार सिंह ने दिया।

इस अवसर पर प्रो. सत्यजीत प्रधान, प्रो. राम पूजन तिवारी, प्रो. राजनाथ, प्रो. ललिता राव, प्रो. जितेंद्र शाही, डॉ. गोरख नाथ तिवारी, प्रो. ओ.पी. चौधरी, डॉ. रमेश यादव, प्रो. रश्मि सिंह, प्रो. अल्का रानी, डॉ. आकाश रंजन, डॉ. कौशलेंद्र सिंह, डॉ. विजय कुमार सिंह, प्रो. शैलेन्द्र वर्मा सहित विभिन्न संस्थानों और विश्वविद्यालयों के शिक्षाविद शामिल रहे।

फरार अभियुक्त के विरुद्ध न्यायालय से उद्घोषणा आदेश जारी

चोपन/सोनभद्र (जनवार्ता)। थाना रॉबर्ट्सगंज में पंजीकृत मुकदमा अपराध संख्या 649/2025 धारा 8/18/25/29/60 एनडीपीएस एक्ट की विवेचना प्रभारी निरीक्षक विजय कुमार चौरसिया, थाना चोपन द्वारा की जा रही है। इस मामले में वांछित अभियुक्त अनीश अंसारी पुत्र ननकू अंसारी निवासी क्योना शादीपुर मजरा गौटिया थाना भमोरा जनपद बरेली मुकदमा दर्ज होने के बाद से ही गिरफ्तारी से बचने हेतु फरार चल रहा है। अभियुक्त के विरुद्ध माननीय विशेष न्यायाधीश (एससी/एसटी एक्ट) सोनभद्र से दिनांक 25 अगस्त 2025 को धारा 84 बीएनएसएस के तहत उद्घोषणा आदेश जारी किया गया। आदेश की तामीला उपनिरीक्षक श्यामदेव यादव द्वारा नियमानुसार अभियुक्त के घर के मुख्य दरवाजे एवं सार्वजनिक स्थानों पर चस्पा करने के साथ-साथ मुनादी कराकर कराई गई। पुलिस ने बताया कि यदि अभियुक्त 25 सितम्बर 2025 तक माननीय न्यायालय में आत्मसमर्पण नहीं करता है तो उसके विरुद्ध न्यायालय के आदेशानुसार कुर्की की कार्यवाही की जाएगी।

शिक्षक दिवस एवं शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन।

वाराणसी आज दिनांक 04 सितम्बर, 2025 को अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र, वाराणसी में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर 'शिक्षक दिवस एवं शिक्षक सम्मान समारोह' का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ मंगलाचरण व मां सरस्वती, महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी तथा डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी की प्रतिमा पर पुष्पार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी तथा सारस्वत अतिथि व मुख्य वक्ता प्रो. बिहारी लाल शर्मा, कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय रहे। साथ ही, शिक्षक सम्मान समारोह में 6 सेवानिवृत्त आचार्यों को शिक्षा में उल्लेखनीय कार्य हेतु केन्द्र द्वारा सम्मानित किया गया। समारोह की अध्यक्षता आईयूसीटीई के निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने की।

अपने संबोधन में प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी, कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने कहा कि विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए शिक्षकों को अपनी शिक्षण और मूल्यांकन पद्धति पर विशेष ध्यान देना चाहिए। उन्होंने ऑनलाइन शिक्षा के महत्व पर बल देते हुए कहा कि शिक्षकों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रभावी उपयोग पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है जिससे वे अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार कर सकते हैं। सारस्वत अतिथि व मुख्य वक्ता प्रो. बिहारी लाल शर्मा, कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने अपने संबोधन में कहा कि "सच्चा शिक्षक वही है जो अपने आचरण से शिक्षा देता है।" उन्होंने अपने वक्तव्य में शिक्षकों के पांच लक्षणों- प्रेरकः, सूचकः, वाचकः, दर्शकः, बोधकः की व्याख्या करते हुए बताया कि शिक्षकों का इन गुणों से परिपूर्ण होना न केवल विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक है, बल्कि शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को भी पूर्ण करता है। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. प्रेम नारायण सिंह, निदेशक, अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, वाराणसी ने कहा कि 'अच्छे शिक्षक ही अच्छे विद्यार्थी तैयार करेंगे'। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य चरित्र निर्माण है और इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शिक्षक को अपनी भूमिका पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ निभानी चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षा वह कर्ज है जिसे हम पिछली पीढ़ी से पाते हैं और अगली पीढ़ी को चुकाते हैं।वहीं सम्मानित आचार्यों में, प्रो. सुभाष चन्द्र तिवारी, पूर्व आचार्य, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने कहा कि शिक्षक का कार्य सूचना देना नहीं, जबकि विद्यार्थियों में नैतिकता व मूल्य की शिक्षा से उनमें राष्ट्र प्रेम की भावना का उदय करना होता है। प्रो. राम किशोर त्रिपाठी, पूर्व आचार्य, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने अपने वक्तव्य में कहा कि विद्यार्थी सबसे निकट गुरु के पास होता है इसलिए विद्यार्थी गुरु के ही चरित्र का अनुकरण करता है, इसीलिए समावर्तन संस्कार में कहा जाता है 'जो मेरे अर्थात् गुरु समान सुचरित है जीवन में उन्हीं का अनुकरण करना, कुचरित का नहीं'। प्रो. राजनाथ उपाध्याय, पूर्व आचार्य, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी ने कहा कि एक शिक्षक में विषय-ज्ञान अति महत्त्वपूर्ण है किन्तु उससे कहीं अधिक विद्यार्थी की जरूरत व उसके बारे में समझ अति आवश्यक है। जिससे विद्यार्थी को सही दिशा में प्रेरित करना संभव होता है। प्रो. अरविन्द कुमार पाण्डेय, पूर्व आचार्य, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी ने कहा कि सूचना इत्यादि प्रदान करने में आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस मददगार सिद्ध हो रही है किन्तु वह करुणा, क्षमाशीलता, सहृदयता, संवेदनशीलता के अभाव को भरने में सक्षम नहीं है, इसमें शिक्षक की भूमिका अत्यंत सार्थक हो जाती है। प्रो. हरीन्द्र प्रसाद सिंह, पूर्व आचार्य, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने तीन महत्त्वपूर्ण बातों को सबके साथ साझा करते हुए कहा कि विद्यार्थियों को 'राष्ट्र, इतिहास के बारे में जानना' जरूरी है क्योंकि इसके बारे में विद्यार्थियों को कम जानकारी है जिसके ज्ञान से देश व राष्ट्र का उन्नयन सम्भव बन सकता है। स्वास्थ्य की शिक्षा सभी स्तरों पर आवश्यक है, साथ ही विद्यार्थियों को 'वित्तीय साक्षरता' का ज्ञान प्रदान करना देश के लिए अति लाभदायक सिद्ध होगा। प्रो. गीता राय, पूर्व आचार्य, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने अपने उद्बोधन में कहा कि शिक्षक का भी अपना व्यक्तित्व है, उसकी आवश्यकताएं हैं, किन्तु उनकी मर्यादाओं का निर्धारण भी जरूरी है। उसे समृद्ध विरासत को धारण करने वाला और उसमें आचरण की सभ्यता का होना अति आवश्यक है. गुरु में ज्ञान के साथ समझदारी भी जरूरी है, जिससे ईमानदारी आती है जिससे देनदारी का भाव विकसित होता है।

इस अवसर पर केंद्र का परिचयात्मक वृत्ति चित्र व प्रो. जे. एस. राजपूत के भाषण का संक्षिप्त अंश भी प्रस्तुत किया गया। मंगलाचरण डॉ. राजा पाठक, अतिथियों का स्वागत प्रो. आशीष श्रीवास्तव (संकाय अध्यक्ष, शैक्षणिक व शोध), धन्यवाद ज्ञापन प्रो. अजय कुमार सिंह, संचालन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया। इस कार्यक्रम में प्रो. सत्यजीत प्रधान, प्रो. राम पूजन तिवारी, प्रो. राजनाथ, प्रो. ललिता राव, प्रो. जितेंद्र शाही, डॉ. गोरख नाथ तिवारी, प्रो. ओ.पी. चौधरी, डॉ. रमेश यादव, प्रो. रश्मि सिंह, प्रो. अल्का रानी, डॉ. आकाश रंजन, डॉ. कौशलेंद्र सिंह, डॉ. विजय कुमार सिंह, प्रो. शैलेन्द्र वर्मा सहित विभिन्न संस्थानों और विश्वविद्यालयों के 100 से अधिक गणमान्य शिक्षाविद उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम का समन्वयन प्रो. अजय कुमार सिंह, सह-समन्वयन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी व डॉ. अनिल कुमार ने किया।

अमर उजाला my city वाराणसी सिटी वाराणसी | शुक्रवा

शिक्षकों के पांच गुण : प्रेरक, सूचक, वाचक, दर्शक और बोधक

आईयूसीटीई में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर शिक्षक सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

माई सिटी रिपोर्टर

वाराणसी। अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आईयूसीटीई) में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। बीएचयू के कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी और संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने बीएचयू, काशी विद्यापीठ और संस्कृत विवि के छह सेवानिवृत्त आचार्यों को शिक्षा में उल्लेखनीय कार्य के लिए सम्मानित किया।

आईयूसीटीई में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर सम्मानित शिक्षक। संवाद

प्रो. चतुर्वेदी ने कहा कि शिक्षकों को एआई के प्रभावी उपयोग पर भी ध्यान देने की जरूरत है। प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने कहा कि शिक्षक में पांच लक्षण होते हैं, प्रेरक, सूचक, वाचक, दर्शक और बोधक।। निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने कहा कि अच्छे शिक्षक ही अच्छे विद्यार्थी तैयार करेंगे। वहीं सम्मानित शिक्षकों ने कहा एआई के गैप को भरने में शिक्षक ही सहायक हैं।

इन्हें मिला सम्मान : संविवि के प्रो. सुभाष चंद्र तिवारी व प्रो. राम किशोर त्रिपाठी, विद्यापीठ के प्रो. राजनाथ उपाध्याय व प्रो. अरविंद कुमार पांडेय और बीएचयू के प्रो. हरींद्र प्रसाद सिंह व प्रो. गीता राय।

शिक्षक ही समाज की असली धुरी : बीएचयू के संबोधि सभागार में मुख्य अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष पूनम मौर्या ने कहा कि शिक्षक ही समाज की असली धुरी है। जब शिक्षक का सम्मान होगा राष्ट्र के प्रति जिम्मेदार नागरिक तैयार होंगे।

चरित्र-संस्कार का निर्माण करते हैं गुरु

वाराणसी। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं है व्यक्ति के अंदर चरित्र का निर्माण करना है। गुरु अपने शिष्यों में चरित्र, संस्कार और अनुशासन का निर्माण करते हैं। ये बातें बीएचयू के प्रो. शंकर मिश्र ने रानी पद्मावती तारा योगतंत्र आदर्श संस्कृत महाविद्यालय में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित कार्यक्रम में कहीं। ज्योतिष विभाग के आचार्य डॉ. विजय कुमार पांडेय, डॉ. माधवेंद्र पांडेय और प्रेमचंद ठाकुर ने भी अपने विचार रखे। अध्यक्षता प्रभारी प्राचार्य डॉ. कमलेश झा ने की। उआदर्श शिक्षक सम्मान डॉ. विवेकानंद झा को मिला। संचालन डॉ. प्रमोद पाठक व धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रभुनारायण उपाध्याय ने किया। ब्यूरो

आईआईटी में रोपे जाएंगे 6000 पौधे

वाराणसी। शिक्षक दिवस आईआईटी (बीएचयू) में एक पेड़ गुरु के नाम के तहत 0.2 हेक्टेयर जमीन पर वन विभाग के ओर से 6000 पौधे रोपे जाएंगे। आईआईटी (बीएचयू) में मियावाकी तकनीक से वन विकसित होगा। प्रभागीय वन अधिकारी स्वाति श्रीवास्तव ने बताया कि काशी में 11 स्थानों पर विशिष्ट वन स्थापित हो चुके हैं। संवाद

सराहा गया समाज में शिक्षकों का योगदान

शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित हुए कार्यक्रम, सम्मानित किए गए जनपद के शिक्षक

जागरण संवाददाता, वाराणसी : शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर गुरुवार को विभिन्न विद्यालयों व महाविद्यालयों में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसमें शिक्षकों को समाज का मार्गदर्शक बताते हुए उनके योगदान को सराहा गया। अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र में मुख्य अतिथि बीएचयू के कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी और मुख्य वक्ता सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा थे। रोटरी क्लब वाराणसी की ओर से महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो. आनंद कुमार त्यागी, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा व बीएचयू के कुलपति प्रो. अजीत कुमार चतुर्वेदी उनके कार्यालय व आवास पर डा. सर्वपल्ली राधा कृष्णन अलंकरण-2025 सम्मान प्रदान किया गया।

महिला शिक्षक संघ वाराणसी की ओर से सामाजिक विज्ञान संकाय, बीएचयू के संबोधि सभागार में सेवानिवृत्त शिक्षक एवं जनपद में कार्यरत विभिन्न क्षेत्र में कार्य करने वाले 250 उत्कृष्ट शिक्षक, शिक्षा मित्र एवं अनुदेशक को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम एक शैक्षिक संगोष्ठी के रूप में भी था जिसका टैगलाइन विकसित भारत @2047 शिक्षा और शिक्षक की भूमिका थी।

विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र में सम्मानित शिक्षक व अधिकारी ● जागरण

इसकी मुख्य अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष पूनम मौर्या, विशिष्ट अतिथि डायट प्राचार्य उमेश कुमार शुक्ला, डा. विनोद राय, जिला विद्यालय निरीक्षक भोलेंद्र प्रताप सिंह, सामाजिक विज्ञान संकाय प्रमुख प्रो. सीडी अधिकारी, बीईओ स्कंद गुप्त थे। अध्यक्षता संस्थाध्यक्ष अमृता सिंह ने की।

पीएमश्री कंपोजिट विद्यालय गंगापुर में तूबा असिम के निर्देशन में शिक्षक दिवस मनाया गया। श्रीअग्रसेन कन्या इंटर कालेज में स्मार्ट क्लास का शुभारंभ शशांक अग्रवाल एवं जूही अग्रवाल ने फीता काटकर किया। प्रबंधक गरिमा टकसाली, गायत्री सिंह, विवेक अग्रवाल, मोहन अग्रवाल, अतुल गोयल, भूपेंद्र अग्रवाल आदि उपस्थित थे। जगतपुर पीजी कालेज के शिक्षक सम्मान समारोह में प्राचार्य प्रो. अनिल प्रताप सिंह ने कहा कि शिक्षक बनते ही सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अग्रसेन कन्या पीजी कालेज में प्राचार्य प्रो. मिथिलेश सिंह ने मुख्य अतिथि केनरा बैंक की मुख्य प्रबंधक एकता गौतम सहित अन्य अतिथियों का स्वागत किया।

डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन से लें प्रेरणा

पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय 39 जीटीसी में प्राचार्य डा. चंद्रभूषण प्रकाश वर्मा के निर्देशन में कई कार्यक्रम हुए। छात्रों को डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन से प्रेरणा लेने तथा उनके बताए रास्ते पर चलने का संदेश दिया। चिरईगांव प्राथमिक विद्यालय गौराकला में छात्र-छात्राओं ने कक्षा को आकर्षक तरीके से सजाया। प्रधानाध्यापक आरती देवी, अटेवा के जिला उपाध्यक्ष डा. एहतेशामुल हक, रेखा उपाध्याय, सादिया तबस्सुम, अनीता सिंह आदि रहे।

ज्ञान दीप एकेडमी चितईपुर वाराणसी में गुरुजनों को सम्मानित करते विद्यार्थी ● स्कूल

शिक्षक दिवस पर शिक्षा नीति 2020 में अध्यापकों की भूमिका पर होगा मंथन

डॉ दीपक प्रसाद

वाराणसी(राष्ट्रीय सिद्धान्त)। अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र वाराणसी द्वारा शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर 04 सितम्बर को प्रातः 10:00 बजे से ह्यह्यशिक्षक दिवस एवं शिक्षक सम्मान समारोहह्णह्ण का भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर के मुख्य अतिथि प्रो. अजीत कुमार चतुर्वेदी, कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी तथा सारस्वत अतिथि होंगे प्रो. बिहारी लाल शर्मा, कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी। समारोह में दोनों ही विद्वान ह्यह्यराष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अध्यापकों की परिवर्तनकारी भूमिकाह्णह्ण विषय पर अपने विचार साझा करेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. प्रेम नारायण सिंह, निदेशक, अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, वाराणसी करेंगे। इस अवसर पर शिक्षा जगत में आजीवन योगदान देने वाले प्रतिष्ठित सेवानिवृत्त आचार्यों को सम्मानित किया जाएगा, जिनमें शामिल हैं प्रो. सुभाष चन्द्र तिवारी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रो. राम किशोर त्रिपाठी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रो. राजनाथ उपाध्याय, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, प्रो. अरविन्द कुमार पाण्डेय, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, प्रो. हरीन्द्र प्रसाद सिंह, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, प्रो. मधुलिका अग्रवाल, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, प्रो. गीता राय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, इस गरिमामयी समारोह का समन्वयन प्रो. अजय कुमार सिंह द्वारा किया जा रहा है तथा सह-समन्वयन की जिम्मेदारी डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी एवं डॉ. अनिल कुमार संभालेंगे।

Rastriya Siddhant, Page 2, 04/09/2025

शिक्षक दिवस पर शिक्षा नीति 2020 में अध्यापकों की भूमिका पर होगा मंथन

वाराणसी। अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र वाराणसी द्वारा शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर गुरुवार सुबह 10:00 बजे से 'शिक्षक दिवस एवं शिक्षक सम्मान समारोह' का भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर के मुख्य अतिथि होंगे प्रो. अजीत कुमार चतुर्वेदी, कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी तथा सारस्वत अतिथि होंगे प्रो. बिहारी लाल शर्मा, कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी। समारोह में दोनों ही विद्वान ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अध्यापकों की परिवर्तनकारी भूमिका'' विषय पर अपने विचार साझा करेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. प्रेम नारायण सिंह, निदेशक, अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, वाराणसी करेंगे। इस अवसर पर शिक्षा जगत में आजीवन योगदान देने वाले प्रतिष्ठित सेवानिवृत्त आचार्यों को सम्मानित किया जाएगा, जिनमें शामिल हैं।

Rastriya Navin Mail, Page 9, 04/09/2025

सराहा गया समाज में शिक्षकों का योगदान

शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित हुए कार्यक्रम, सम्मानित किए गए जनपद के शिक्षक

जागरण संवाददाता, वाराणसी : शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर गुरुवार को विभिन्न विद्यालयों व महाविद्यालयों में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसमें शिक्षकों को समाज का मार्गदर्शक बताते हुए उनके योगदान को सराहा गया। अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र में मुख्य अतिथि बीएचयू के कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी और मुख्य वक्ता सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा थे। रोटरी क्लब वाराणसी की ओर से महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो. आनंद कुमार त्यागी, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा व बीएचयू के कुलपति प्रो. अजीत कुमार चतुर्वेदी उनके कार्यालय व आवास पर डा. सर्वपल्ली राधा कृष्णन अलंकरण-2025 सम्मान प्रदान किया गया।

महिला शिक्षक संघ वाराणसी की ओर से सामाजिक विज्ञान संकाय, बीएचयू के संबोधि सभागार में सेवानिवृत्त शिक्षक एवं जनपद में कार्यरत विभिन्न क्षेत्र में कार्य करने वाले 250 उत्कृष्ट शिक्षक, शिक्षा मित्र एवं अनुदेशक को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम एक शैक्षिक संगोष्ठी के रूप में भी था जिसका टैगलाइन विकसित भारत @2047 शिक्षा और शिक्षक की भूमिका थी।

विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र में सम्मानित शिक्षक व अधिकारी • जागरण

इसकी मुख्य अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष पूनम मौर्या, विशिष्ट अतिथि डायट प्राचार्य उमेश कुमार शुक्ला, डा. विनोद राय, जिला विद्यालय निरीक्षक भोलेंद्र प्रताप सिंह, सामाजिक विज्ञान संकाय प्रमुख प्रो. सीडी अधिकारी, बीईओ स्कंद गुप्त थे। अध्यक्षता संस्थाध्यक्ष अमृता सिंह ने की।

पीएमश्री कंपोजिट विद्यालय गंगापुर में तृबा असिम के निर्देशन में शिक्षक दिवस मनाया गया। श्रीअग्रसेन कन्या इंटर कालेज में स्मार्ट क्लास का शुभारंभ शशांक अग्रवाल एवं जूही अग्रवाल ने फीता काटकर किया। प्रबंधक गरिमा टकसाली, गायत्री सिंह, विवेक अग्रवाल, मोहन अग्रवाल, अतुल गोयल, भूपेंद्र अग्रवाल आदि उपस्थित थे। जगतपुर पीजी कालेज के शिक्षक सम्मान समारोह में प्राचार्य प्रो. अनिल प्रताप सिंह ने कहा कि शिक्षक बनते ही सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अग्रसेन कन्या पीजी कालेज में प्राचार्य प्रो. मिथिलेश सिंह ने मुख्य अतिथि केनरा बैंक की मुख्य प्रबंधक एकता गौतम सहित अन्य अतिथियों का स्वागत किया।

डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन से लें प्रेरणा

पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय 39 जीटीसी में प्राचार्य डा. चंद्रभूषण प्रकाश वर्मा के निर्देशन में कई कार्यक्रम हुए। छात्रों को डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन से प्रेरणा लेने तथा उनके बताए रास्ते पर चलने का संदेश दिया। चिरईगांव प्राथमिक विद्यालय गौराकला में छात्र-छात्राओं ने कक्षा को आकर्षक तरीके से सजाया। प्रधानाध्यापक आरती देवी, अटेवा के जिला उपाध्यक्ष डा. एहतेशामुल हक, रेखा उपाध्याय, सादिया तबस्सुम, अनीता सिंह आदि रहे।

ज्ञान दीप एकेडमी चितईपुर वाराणसी में गुरुजनों को सम्मानित करते विद्यार्थी • स्कूल

दैनिक जागरण पेज नं III

एआई से शिक्षक कार्यक्षेत्र को दें विस्तार

गुरु की महिमा का बखान करते हुए संत कबीरदास ने इन पंक्तियों में गुरु को गोविंद यानी भगवान से भी ऊंचा पद दिया है। गुरुवार को शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर सर्वशिक्षा की नगरी काशी ने भी गुरुजन को नमन किया। इस दौरान विविध आयोजनों में गुरुजन को सम्मानित करते हुए कृतज्ञता जताई गई।

बीएचयू के कुलपति ने किया आह्वान

वाराणसी। बीएचयू के कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी ने कहा कि शिक्षकों को एआई का प्रभावी उपयोग कर अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार करना चाहिए। अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आईयूसीटीई) में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर 'शिक्षक दिवस एवं शिक्षक सम्मान समारोह' में वह मुख्य अतिथि थे। समारोह में छह सेवानिवृत्त आचार्यों को सम्मानित किया गया।

मुख्य वक्ता संविवि के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने शिक्षकों के पांच लक्षण प्रेरक, सूचक, वाचक, दर्शक और बोधक की व्याख्या की। अध्यक्षता आईयूसीटीई निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने की। समारोह में प्रो. सुभाष चन्द्र तिवारी, प्रो. रामकिशोर त्रिपाठी, प्रो. राजनाथ, प्रो. अरविन्द पांडेय, प्रो. हरीन्द्र प्रसाद सिंह, प्रो. गीता राय आदि ने विचार रखे।

बीएचयू के अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र में गुरुवार को आयोजित शिक्षक दिवस समारोह में शामिल विशिष्टजन।

उत्कृष्ट कार्यों के लिए अध्यापकों को किया गया सम्मानित

वाराणसी। महिला शिक्षक संघ की तरफ से गुरुवार को बीएचयू के सामाजिक विज्ञान संकाय में उत्कृष्ट कार्यों के लिए शिक्षकों का सम्मान किया गया। मुख्य अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष पूनम मौर्या, विशिष्ट अतिथि डायट प्राचार्य उमेश कुमार शुक्ला, अपर सचिव माध्यमिक शिक्षा डॉ. विनोद कुमार राय, डीआईओएस भोलेंद्र प्रताप सिंह, सामाजिक विज्ञान संकाय प्रमुख प्रो. अशोक कुमार उपाध्याय, अरविंद कुमार पांडेय, बीईओ स्कंद गुप्त और जनपद के सभी एसआरजी आरपी भी मौजूद थे। कार्यक्रम में 250 से अधिक शिक्षकों ने भाग लिया। संघ की जिलाध्यक्ष अमृता सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया।

गुरुजनों की चौखट पर जाकर सम्मान

वाराणसी। शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर रोटरी क्लब वाराणसी की तरफ से तीनों विश्वविद्यालय के कुलपतियों को सर्वपल्ली राधाकृष्णन अलंकरण सह पंच विधि सम्मान से अलंकृत किया। सदस्यों ने 'गुरुजन का सम्मान उनकी चौखट पर जाकर' किया। बीएचयू के कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा और विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एके त्यागी को उनके कार्यालय में जाकर डॉ. सर्वपल्ली राधा कृष्णन अलंकरण-2025 प्रदान किया। इस दौरान क्लब अध्यक्ष मनोरंजन अग्रवाल, सचिव इंटरनेशनल एथलीट नीलू मिश्रा, पूर्व अध्यक्ष चन्द्रशेखर कपूर, पूर्व अध्यक्ष डॉ. अजीत सैगल, कार्यक्रम संयोजिका मीनाक्षी दीक्षित, डॉ. अनिल ओहरी, योगेश अग्रवाल, अशरफ़ अली, नवीन आदि मौजूद थे।

हिन्दुस्तान पेज नं 7

शिक्षण व मूल्यांकन पर विशेष ध्यान दें शिक्षक

बोले प्रो. चतुर्वेदी

अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर समारोह

शिक्षा के क्षेत्र में महती योगदान देने वाले अवकाश प्राप्त छह गुरुजनों का हुआ सम्मान

वाराणसी। बीएचयू के कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी ने कहा कि विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए शिक्षकों को अपनी शिक्षण और मूल्यांकन पद्धति पर विशेष ध्यान देना चाहिए। उन्होंने ऑनलाइन शिक्षा के महत्व पर बल देते हुए कहा कि शिक्षकों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रभावी उपयोग पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है जिससे वे अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार कर सकते हैं।

यह बातें उन्होंने अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर गुरुवार को शिक्षक दिवस एवं शिक्षक सम्मान समारोह में बतौर मुख्य अतिथि कही। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण व मां सरस्वती, महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी तथा डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी की प्रतिमा पर पुष्पार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। इस मौके पर समारोह में छह सेवानिवृत्त आचार्यों को शिक्षा में उल्लेखनीय कार्य के लिए केन्द्र द्वारा सम्मानित किया गया। समारोह की अध्यक्षता आईयूसीटीई के निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने की।

सारस्वत अतिथि व मुख्य वक्ता संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने कहा कि सच्चा शिक्षक वही है, जो अपने आचरण से शिक्षा देता है। उन्होंने शिक्षकों के पांच लक्षणों- प्रेरकः, सूचकः, वाचकः, दर्शकः, बोधकः की व्याख्या करते हुए बताया कि शिक्षकों का इन गुणों से परिपूर्ण होना न केवल विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक है, बल्कि शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को भी पूर्ण करता है। अध्यक्षीय उद्बोधन में केंद्र के निदेशक उद्बोधन में प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने कहा कि अच्छे शिक्षक ही अच्छे विद्यार्थी तैयार करेंगे। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य चरित्र निर्माण है और इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शिक्षक को अपनी भूमिका पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ निभानी चाहिए।

सम्मानित आचार्यों में संविवि के पूर्व आचार्य प्रो. सुभाष चन्द्र तिवारी, प्रो. राम किशोर त्रिपाठी, काशी विद्यापीठ के प्रो. राजनाथ उपाध्याय, प्रो. अरविन्द कुमार पाण्डेय, बीएचयू के प्रो. हरीन्द्र प्रसाद सिंह व प्रो. गीता राय शिक्षकों के महत्व को विस्तार से बताया।

अतिथियों का स्वागत प्रो. आशीष श्रीवास्तव, धन्यवाद ज्ञापन प्रो. अजय कुमार सिंह, संचालन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया। इस कार्यक्रम में प्रो. सत्यजीत प्रधान, प्रो. रामपूजन तिवारी, प्रो. राजनाथ, प्रो. ललिता राव, प्रो. जितेंद्र शाही, डॉ. गोरख नाथ तिवारी, प्रो. ओपी चौधरी, डॉ. रमेश यादव, प्रो. रश्मि सिंह, प्रो. अल्का रानी, डॉ. आकाश रंजन, डॉ. कौशलेंद्र सिंह, डॉ. विजय कुमार सिंह, प्रो. शैलेन्द्र वर्मा आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समन्वयन प्रो. अजय कुमार सिंह, सह-समन्वयन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी व डॉ. अनिल कुमार ने किया।

जनसंदेश टाइम्स पेज नं 4

शिक्षण व मूल्यांकन पर विशेष ध्यान दें शिक्षक

बोले प्रो. चतुर्वेदी

अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर समारोह

शिक्षा के क्षेत्र में महती योगदान देने वाले अवकाश प्राप्त छह गुरुजनों का हुआ सम्मान

वाराणसी। बीएचयू के कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी ने कहा कि विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए शिक्षकों को अपनी शिक्षण और मूल्यांकन पद्धति पर विशेष ध्यान देना चाहिए। उन्होंने ऑनलाइन शिक्षा के महत्व पर बल देते हुए कहा कि शिक्षकों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रभावी उपयोग पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है जिससे वे अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार कर सकते हैं।

यह बातें उन्होंने अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर गुरुवार को शिक्षक दिवस एवं शिक्षक सम्मान समारोह में बतौर मुख्य अतिथि कही। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण व मां सरस्वती, महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी तथा डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी की प्रतिमा पर पुष्पार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। इस मौके पर समारोह में छह सेवानिवृत्त आचार्यों को शिक्षा में उल्लेखनीय कार्य के लिए केन्द्र द्वारा सम्मानित किया गया। समारोह की अध्यक्षता आईयूसीटीई के निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने की।

सारस्वत अतिथि व मुख्य वक्ता संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने कहा कि सच्चा शिक्षक वही है, जो अपने आचरण से शिक्षा देता है। उन्होंने शिक्षकों के पांच लक्षणों- प्रेरकः, सूचकः, वाचकः, दर्शकः, बोधकः की व्याख्या करते हुए बताया कि शिक्षकों का इन गुणों से परिपूर्ण होना न केवल विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक है, बल्कि शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को भी पूर्ण करता है। अध्यक्षीय उद्बोधन में केंद्र के निदेशक उद्बोधन में प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने कहा कि अच्छे शिक्षक ही अच्छे विद्यार्थी तैयार करेंगे। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य चरित्र निर्माण है और इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शिक्षक को अपनी भूमिका पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ निभानी चाहिए।

सम्मानित आचार्यों में संविवि के पूर्व आचार्य प्रो. सुभाष चन्द्र तिवारी, प्रो. राम किशोर त्रिपाठी, काशी विद्यापीठ के प्रो. राजनाथ उपाध्याय, प्रो. अरविन्द कुमार पाण्डेय, बीएचयू के प्रो. हरीन्द्र प्रसाद सिंह व प्रो. गीता राय शिक्षकों के महत्व को विस्तार से बताया।

अतिथियों का स्वागत प्रो. आशीष श्रीवास्तव, धन्यवाद ज्ञापन प्रो. अजय कुमार सिंह, संचालन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया। इस कार्यक्रम में प्रो. सत्यजीत प्रधान, प्रो. रामपूजन तिवारी, प्रो. राजनाथ, प्रो. ललिता राव, प्रो. जितेंद्र शाही, डॉ. गोरख नाथ तिवारी, प्रो. ओपी चौधरी, डॉ. रमेश यादव, प्रो. रश्मि सिंह, प्रो. अल्का रानी, डॉ. आकाश रंजन, डॉ. कौशलेंद्र सिंह, डॉ. विजय कुमार सिंह, प्रो. शैलेन्द्र वर्मा आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समन्वयन प्रो. अजय कुमार सिंह, सह-समन्वयन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी व डॉ. अनिल कुमार ने किया।

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक

प्रो. प्रेम नारायण सिंह,

निदेशक, आईयूसीटीई, बीएचयू, वाराणसी

संरक्षक

प्रो. आशीष श्रीवास्तव

संकाय प्रमुख, संकाय प्रमुख – शैक्षणिक एवं शोध

कार्यक्रम समन्वयक

डॉ.सुनील कुमार त्रिपाठी

सहायक प्रो., अ.वि.अ.शि.के.

सह समन्वयक

डॉ. ज्ञानेन्द्र सिंह

सहायक प्रो., अ.वि.अ.शि.के.

तकनीकी टीम

श्री कुलदीप पाण्डेय, सिस्टम विश्लेषक

श्री राणा प्रताप राव, हार्डवेयर इंजीनियर

श्री विकास जानू, वेबमास्टर

श्री आनंद जायसवाल, सर्वर इंजीनियर

श्री अभिज्ञान कुमार श्रीवास्तव, तकनीशियन (सॉफ्टवेयर प्रबंधन)

श्री शुभम प्रजापति, तकनीकी सहायक (मल्टीमीडिया)

प्रशासनिक टीम

डॉ. नंद लाल, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

डॉ. अनिल कुमार सिंह, एसओ (प्रशासन)

श्री आनंद कुमार यादव, एलडीसी

लेखा अनुभाग

श्री एम.आर. रामसुब्रमण्यम, प्रशासनिक अधिकारी (वित्त)

डॉ. विजय कुमार राय, सहायक

सुश्री पूजा सिंह, एलडीसी

सुश्री नेहा पटेल, एलडीसी

कार्यक्रम की झलकियाँ

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
आईयूसीटीई परिसर, सुंदर बगिया
नरिया-बीएलडब्ल्यू रोड, वाराणसी - 221005
उत्तर प्रदेश

संपर्क नंबर.: 0542-2368823
ईमेल: directoroffice@iucte.ac.in